

## पात्र-परिचय

### पुरुष—

१—सूत्रधार	नाटक-निर्देशक ।
२—कृष्ण	द्वारकाधीश, भगवान् ।
३—बलभद्र	कृष्णक जेठ भाय ।
४—प्रद्युम्न	कृष्णक पुत्र ।
५—नारद	देवर्षि ।
६—गरुड	पक्षिराज ।
७—अनिरुद्ध	कृष्णक पौत्र, प्रद्युम्नक पुत्र, उषाक पति, नायक ।
८—चार	कृष्णक गुप्तचर ।
९—चार	चित्रलेखाक दूत ।
१०—बाण	बाणासुर, दैत्यराज, उषाक पिता ।
११—कुम्भाण्ड	बाणासुरक मन्त्री ।
१२—शौवारिक (द्वारी)	बाणासुरक द्वारपाल ।
१३—ज्वर	रोगराज, बाणक सहायक ।

### स्त्री—

१—नटी	सूत्रधारक पत्नी ।
२—उषा	बाणासुरक पुत्री, नायिका ।
३—रामा	उषाक सखी, कुम्भाण्डक पुत्री ।
४—चित्रलेखा	उषाक सखी, गन्धर्वकन्या ।
५—दुर्गा	देवी भगवती दुर्गा ।
६—रुक्मिणी	कृष्णक पटरानी ।

## उषाहरणनाटकम्

—महर्षि—

१. उषाहरणनाटकम्	१. उषाहरणनाटकम्
२. उषाहरणनाटकम्	२. उषाहरणनाटकम्
३. उषाहरणनाटकम्	३. उषाहरणनाटकम्
४. उषाहरणनाटकम्	४. उषाहरणनाटकम्
५. उषाहरणनाटकम्	५. उषाहरणनाटकम्
६. उषाहरणनाटकम्	६. उषाहरणनाटकम्
७. उषाहरणनाटकम्	७. उषाहरणनाटकम्
८. उषाहरणनाटकम्	८. उषाहरणनाटकम्
९. उषाहरणनाटकम्	९. उषाहरणनाटकम्
१०. उषाहरणनाटकम्	१०. उषाहरणनाटकम्
११. उषाहरणनाटकम्	११. उषाहरणनाटकम्
१२. उषाहरणनाटकम्	१२. उषाहरणनाटकम्
१३. उषाहरणनाटकम्	१३. उषाहरणनाटकम्
१४. उषाहरणनाटकम्	१४. उषाहरणनाटकम्
१५. उषाहरणनाटकम्	१५. उषाहरणनाटकम्
१६. उषाहरणनाटकम्	१६. उषाहरणनाटकम्
१७. उषाहरणनाटकम्	१७. उषाहरणनाटकम्
१८. उषाहरणनाटकम्	१८. उषाहरणनाटकम्
१९. उषाहरणनाटकम्	१९. उषाहरणनाटकम्
२०. उषाहरणनाटकम्	२०. उषाहरणनाटकम्

—महर्षि—

१. उषाहरणनाटकम्	१. उषाहरणनाटकम्
२. उषाहरणनाटकम्	२. उषाहरणनाटकम्
३. उषाहरणनाटकम्	३. उषाहरणनाटकम्
४. उषाहरणनाटकम्	४. उषाहरणनाटकम्
५. उषाहरणनाटकम्	५. उषाहरणनाटकम्
६. उषाहरणनाटकम्	६. उषाहरणनाटकम्
७. उषाहरणनाटकम्	७. उषाहरणनाटकम्
८. उषाहरणनाटकम्	८. उषाहरणनाटकम्
९. उषाहरणनाटकम्	९. उषाहरणनाटकम्
१०. उषाहरणनाटकम्	१०. उषाहरणनाटकम्
११. उषाहरणनाटकम्	११. उषाहरणनाटकम्
१२. उषाहरणनाटकम्	१२. उषाहरणनाटकम्
१३. उषाहरणनाटकम्	१३. उषाहरणनाटकम्
१४. उषाहरणनाटकम्	१४. उषाहरणनाटकम्
१५. उषाहरणनाटकम्	१५. उषाहरणनाटकम्
१६. उषाहरणनाटकम्	१६. उषाहरणनाटकम्
१७. उषाहरणनाटकम्	१७. उषाहरणनाटकम्
१८. उषाहरणनाटकम्	१८. उषाहरणनाटकम्
१९. उषाहरणनाटकम्	१९. उषाहरणनाटकम्
२०. उषाहरणनाटकम्	२०. उषाहरणनाटकम्

म० म० हर्षनाथ झा विरचितम्

## उषाहरणनाटकम्

[नाट्य - गीति]

राग इमन [गीत सं० - १]

जय जय कुमतिविनाशिनि देवि,  
सभ अभिमत पुर तुअ पदसेवि ।  
तनुदधि निमिषत कुन्दक भाम,  
आननरुचि शशिविम्ब उदास ।  
आसन धवल कमल, शशि भाल,  
श्वेत वसन लस, नयन विशाल ।  
वीणादिषड कलश धर हाथ  
जपमाला वर पुस्तक साध ।  
हर्षनाथकवि मनहय भान,  
भगवति करिय अभय वरदान ॥

उषाहरण नाटकक व्याख्या

[ गीत सं० - १ ]

कुमति-विनाशिनी = अघलाह बुद्धिके नष्ट करतिहारि । अभिमत = अभिलषित । तनुदधि... = देहक कामिनी सौ कुन्द फूलक छविके निमिषत करतिहारि (श्वेतवर्णा) । आननरुचि = मुँहक छवि सौ चन्द्रमाक मण्डल उदास होइत अछि । धवल = उज्जर । शशि भाल = कपार पर चन्द्रमा । श्वेतवसन = उज्जर वस्त्र । लस = शोभित होइछ ॥



(गीतार्थे श्लोकः)

या शुक्लाम्बुजहासना सुतयता पूर्णकुम्भानना  
कुन्देन्दुज्वलविग्रहा निज रसविभ्रती पुस्तकम् ।  
वीणामक्षगुणं सुधाद्यकलशमञ्जुवादिदेवाचिता  
सर्वाभीष्टफलप्रदा वितरतु श्रेयांसि सा शारदा ॥१॥

(नायक्ये)

सूत्रधारः—अलमतिविस्तरेण । आविष्टोऽस्मि खण्डवलाकुलरत्नाकरसुधाकरेण  
कविपण्डितकुलहृदयसरीसृहभृङ्गायमाणम् सकलराजकुलमुकुट-  
रत्नायमानचरणकमलेन मिथिलामहीमहेन्द्रेण महाराज श्री  
लक्ष्मीश्वरसिंहदेवदेवेन यथाऽस्मत्सभापण्डितेन कविपण्डितकुल-  
तिलकायमानेन सकराङ्गीकुलनन्दनेन श्रीहर्षनायकशर्मणा विर-  
चितमभिनवमुद्राहरणनाम नाटकमभिनीयतामिति । तद् एहि-

(गीतक अर्थ में श्लोक)

जे उज्जर कमलक आसनवाली सुन्दर आँखिवाली, पूर्णचन्द्र सन  
मुँहवाली कुन्द ओ चन्द्रमा मन उज्जर चमकैत देहवाली, अपना हाथ-  
सभक द्वारा पुस्तक, वीणा, दवाक्षमाला ओ अमृत भरल पैल धारण  
करैत, ब्रह्मा आदि देवता सँ पूजित भय सकल अभीष्ट फल देनिहारि  
छथि से श्रीसरस्वती मञ्जुल वितरण करथ ॥१॥

[नायकीक अर्थ में]

सूत्रधार—विशेष कहब उचित नहि । आदेश पओने छी—खण्डवलाकुलरूपी  
समुद्रक चन्द्रमास्वरूप, कवि-पण्डितसभक हृदयरूपी कमलक हेतु  
भौंरास्वरूप, सभ राजालोकनिक मुकुटक रत्न सँ युक्त चरणकमल-  
वाला, मिथिलाक राजा महाराज श्रीमान् लक्ष्मीश्वर सिंहदेवदेव  
सँ जे हमर सभापण्डित, कवि ओ पण्डित मे ओष्ठ, सकराङ्गी-वंश मे  
उत्पन्न श्री हर्षनाथ शर्माक बनाओल नवीन 'उवाहरण' नामक नाटक

गीताहूय संगीतकमवतारयामि तावत् (सर्वतः परिक्रम्य नेप-  
थ्याभिमुखमथलोक्य)—प्रिये ! इहागम्यताम् ।

(प्रवेश)

नटी—एसहि आणवेहु अज्जउतो ।

[एषाऽस्मि आशापयतु आर्यपुत्रः ।]

सूत्र०—प्रिये ! पश्य सर्वातिशयमुपमृद्धोऽयं वसन्तसमयः । तथाहि—

सम्पुल्लन्तवमल्लिकापरिमल श्रीखण्डसैलानिलो  
माद्यत्कोकिलकामनीकलकलः कन्दर्पवाणानलः ।  
भृङ्गालीकुलकाकली नववधूणीकटाक्षधली  
निशङ्कुम्भुवि सर्वतः प्रसरति प्राप्ते वसन्तोत्सवे ॥२॥

तथैतं वसन्तसमयमधिकृत्य सङ्गीतकमनुतिष्ठतु भवती ।

नटी—जहाणवेदि अज्जउतो [यथा शापमत्यायेपुत्रः ।] (इति गायति) ।

खेलाउ' । तँ घरवाली केँ बजाय संगीत प्रारम्भ करैत छी ।  
(चारुभर धूमि नेपथ्य दिस देखि) प्रिये ! एम्हर आव ।

(प्रवेश कय)

नटी—इयेह छी आज्ञा देल जाओ आर्यपुत्र ।

सूत्र०—प्रिये ! देखू, चारुभर ई वसन्त समय भरल पुरल अछि । जेना कि—

फुलाइत नवीन बेली फूलक सुगन्धि, मलयपर्वतक बसात, मल  
कोइलीक गन्ध, कामवाणक आगि, भ्रमरी सभक गुञ्जन, नववधू  
सभक कटाक्षक गति—ई सभ वसन्त समय अथला पर पृथ्वी पर  
निविष्ट सर्वत्र पसरय लयैल ॥२॥

तँ एहि वसन्त समयक विषय कय अहाँ संगीत गाव ।

नटी—जे आज्ञा देखि आर्यपुत्र । (गवीत छयि ।)



(राग वसन्त) [गीत सं०-२]

मदननरेश विजय मनकाज,  
 लय परिजन अनुगत ऋतु राज ।  
 शोभित अलितति मरकतमाल,  
 केशर मणिमय—छत्र विशाल ।  
 माधत-कम्पितमाधवि-पुंज,  
 नाचत रसमय भवन—निकुंज ।  
 अलिकुलगुंजित गानविलास,  
 चम्पक किशुक दीपकभास ।  
 कोकिल कलरव नृपतिनिदेश,  
 बलत समीरन दण्ड उदेश ।  
 निरखि सुरत विषटन अपराध,  
 करत कोप तँह मानक बाध ।  
 रसमय हर्षनाथकवि भान,  
 नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान ॥

अपि च— [गीत सं०-३]

उसरल अगभरि किशिर पसार,  
 बसल सरस ऋतुपति बनिजार ।

[गीत सं०-२]

मदन नरेश = राजा कामदेव । अनुगत ऋतुराज = वसन्तक संग ।  
 अलितति = भौराक समूह । मरकत = मणि विशेष । माधत-कम्पित  
 = हवा ही झुलाओल । अलिकुल = भौराक समूह । किशुक =  
 पलाश । कलरव = स्वर । नृपति-निदेश = राजाक आज्ञा ही (कोइ-  
 लीक स्वररूपी) । समीरन = हवा । दण्ड उदेश = दण्ड देवाक हेतु  
 (विरहिणीके) ॥

आओरी— [गीत सं०-३]

उसरल = हटल । पसार = बेषवाक पसरल वस्तु । ऋतुपति

पसरल सओदा मधुरस फूल,  
 अभिनव सौरभ, प्रेम अमूल ।  
 शीलत दक्षिण पवन विचारि,  
 भमि भमि मांगत भनर भिखारि ।  
 पिककुल करत दलालक काज,  
 गाहक तरुणी तरुणसमाज ।  
 हसित वचन लोचन दय वाम,  
 किनत सिनेह रतन सब ठाम ।  
 रसमय हर्षनाथकवि भान,  
 नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान ॥

सूत्र०— प्रिये साधु गीतम्

[नेपथ्ये—इदो इदो पियसखीओ ।] [इत इतः प्रियसखी]

सूत्र०—(आकर्षण) कथमिदं बाणपुत्री उवा कुम्भाण्डदुहिता रामया चित्रले-  
 खयाऽप्यरसा च समं किमपि मन्त्रयन्ती इत एवाभिवर्तते । तदेहि,  
 आवागम्यन्तरकरणीयाय सज्जीभावाव । (इति निष्क्रान्ती) ।

[इति प्रस्तावना ।]

बनिजार = वसन्तरूपी बनिर्वा । दक्षिण-पवन = मलयानिल । पिक-  
 कुल = कोइलीसभ । दलाल = सौदा पटओनिहार ॥

सूत्र०— प्रिये ! उत्तम गाओल ।

[नेपथ्य मे— एम्हरहि बाटे पियसखी ।]

सूत्र०—(मूनि) की ई बाणासुरक पुत्री उवा, कुम्भाण्डक बेटी रामाक ओ  
 अप्सरा चित्रलेखाक संग किछु परामर्श करैत एम्हरहि अबैत  
 छथि ? तँ आज, हमहूँ दुनू गोठए अग्रिम कार्यक हेतु तैयार होइ ।

(दुह बहार भेलाइ ।)

[इति प्रस्तावना]

[तखन दुह सखीक संग उवा प्रवेश करैत छथि ।]



(ततः प्रविशति सखीभ्यां सहिता उवाच ।)

गीत सं०-४ राग कल्याण

तडित-विनिन्दक सुन्दर वेश,

मज्जामिनि कामिनि परवेत ।

अलक कलित जानन अभिराम,

जनि घन-बलित विमल हिमधाम ।

अधर ललित, नासा अति शीघ्र,

कीर शीघ्र जनु बिम्बक लोभ ।

निरखि युगल कुच पङ्कज कोति,

चललि रोमावलि मधुकर पति ।

अविरल नूपुर-किङ्किणि-राव,

मदनविजय जनु सामग गाव ।

रसमय हर्षनाथकवि गाव,

नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुभु भाव ॥

राग कान्हड़ा, गीत सं०-५

उपचित हृदय अनङ्ग, चललि रमणि सखियङ्ग ।

मन्द मन्द परवार, जनि आलस कुचमार ।

अलस नयन चित चोर, जनि मद भरल चकोर ।

[गीत सं०-४]

तडित-विनिन्दक=विजलोकाक निन्दा करयवला स्वरूप । मज्जामिनि=हाथी सनक गतिवाली । अलक-कलित=केश सँ लोभित । जानन अभिराम=मुँह सुन्दर लगेछ । घनबलित=मेघ सँ साभित । हिमधाम=चन्द्रमा ॥ कीर=सुगा । बिम्ब=तिलकोइक फट्ट ॥ रोमावलि मधुकर=पेटक रामरक्षा खी भीरा । अविरल=सघन । राव=शब्द । मदन-विजय=कामदेवक विजय । सामग=सामवेदक गायक ॥

[गीत सं०-५]

उपचित=बढ़ल । अनङ्ग=कामदेव । अलस-नयन=अलसायल

बोल बचन हसि मन्द, अमिय बरिस जनु चन्द ।

हर्षनाथ कवि भान मिथिलावति रस जान ॥

रामा—सहि बाणपुत्ति ! उक्कण्ठिदाव लक्ष्मीअवि भोदी । ता कि कोवि पुरिसो तुत्तम हिअए बट्टिदि ।

[सखि बाणपुत्री ! उक्कण्ठितेय लक्ष्मणे भवती, तत्किं कोऽपि पुरुषस्तत्र हृदये वर्तते ।]

उवा—(सप्रणयकोपम्) किम्पि हिअए गदुअ जहा तहा जप्पसि । ता इदो दूर ओसर (इति पुष्पमालया साङ्ग्यति) ।

[किमपि दूरये कृत्वा पथानया जहासि । तद्विती दूरमपसर ।]

चित्रलेखा—सहि बाणपुत्ति ! अप्पणो सहीअणो का लज्जा, ता कधेहि सच्च ।

[सखि बाणपुत्ति ! आत्मनः सखीजनो का लज्जा, तत्कथय सत्यम् ।]

उवा—(मलज्जनमधोमुखी संस्कृतमाश्रित्य)—

गौरीशिवजलकीडा यदा दृष्टा मया सखि ! ।

ततः प्रवृत्ति केनानि हेतुना व्याकुलम्पनः ॥३॥

रामा—कामेनेति भणिदव्वं ।

[कामेनेति भणितव्यम् ।]

अखि । अमिय=अमृत ॥

रामा—सखी बाणपुत्री ! अहाँ उक्कण्ठित अहाँ लगैत छी, तँ की कोनो पुरुष अहाँक हृदय मे छथि ?

उवा—(स्नेहयुक्त क्रोध कम) किछु मन मे राखि अष्ट सष्ट बजैत छह, तेँ एतय सँ दूर भागह । (फूलक मालासँ मारैत छथि ।)

चित्र—सखी बाणपुत्री ! अपन सखी सँ कोन लाज ? तेँ सत्य कह ।

उवा—(लाज करैत नीचाँ मुहें संस्कृतक आश्रय लय)—

गौरी ओ शिवक जलविहार जखन हम देखल, हे सखि ! तखन

सँ कोनो कारण हमर मन व्याकुल अछि ॥३॥

रामा—काम सँ से कह ।



उषा—सलज्जमधोमुखी तिष्ठति ।

चित्र०—सहि ! देईए गौरीए प्रसादेन सर्व सुलभ होदि, ता तामेव प्रसा-  
देन मल्लहा । (इति सर्वार्थ देवीगृहपुष्टि गमननाटयन्ति ।)

[सखि ! देव्या नीचार्थः प्रसादेन सर्व सुलभ भवति, तत्तामेव प्रसादयितुं गच्छामः ।]

[सोहनी, गीत सं०-६]

सखि सब सङ्ग लय मन अनुमानी.

गिरजा पूजन चललि सेआनी ।

अक्षत चानन सिन्दुर फले.

बेलान नव कय समवूले ।

पुजलनि मन दय भगति बहाए.

कयलनि बिनती माथ नवाए ।

मँगलनि वर पुनु दुहु कर ओरी,

आषा मोर परिपूरधु गौरी ।

हर्षनाथकवि भन मन लाए

सबखन भगवति रहधु सहाए ॥

(ततः प्रविशति परितुष्टा गौरी)

उषा—(लाजे नीचामुहें रहैत छथि ।)

चित्र०—सखी ! देवी गौरीक प्रसाद सँ सब सुलभ होइछ, तै हुनकें प्रसन्न कर-  
वाक हेतु चलैत चल ।

[सभ केओ देवीक मन्दिरक हेतु जयवाक अभिनय करैत छथि ।]

[गीत सं०-६]

सेआनी—चतुर नायिका । अनुमानी—विचारि । समवूले—जुटाय ।

[सखन सन्तुष्ट भेलि गौरी प्रवेश करैत छथि ।]

सोहनी, गीत सं०-७

निज जन आरति हरण उदेश,

हिमगिरिनन्दिनि देल परवेश ।

जनिक चरण युग दरशन लागी,

हरि हर करथि कतेक तप जागी ।

भगति विवश सेह दरशन देला,

बाणकुमारि अभिमत बुझि लेला ।

कहुलनि माधव चुचिदल पाए,

हरि तिथि सपन मिलत पति आए ।

ई कहि अन्तहित भय गेली,

बाणकुमारि सुनि हरवित भेली ।

हर्षनाथ कवि भन मन लाए,

सबखन भगवति रहधु सहाए ॥

( इति निष्क्रान्ता ।)

रामा—सहि बाणपुत्ति ! सन्पन्नमनोरहा तुमं देईए प्रसादेन ।

[सखि बाणपुत्ति ! सन्पन्नमनोरथा त्वं देव्याः प्रसादेन ।]

उषा—(सलज्जमधोमुखी तिष्ठति) ।

[गीत सं०-७]

आरति=दुःख । हिमगिरिनन्दिनि=पार्वती । हरि-हरि=विष्णु ओ-  
महादेव । भगति-विवश=भक्ति सँ विवश भय । माधव=वैशाख  
मासक । चुचिदल=शुक्लपक्ष । हरि तिथि=एकादशी । अन्तहित=  
सुप्त ॥

(गौरी बहार भय गेलीहि ।)

रामा सखी बाणपुत्री ! पूजमनोरथ भेलहुं अहाँ देवीक कृपा सँ ।

उषा—(लाजे नीचामुहें रहैत छथि ।)



चित्र०—सहि बाणपुत्ति ! मुज्ज तादस्य घरे आणन्दद्वणी सुणीअदि, ता अहो-  
वि तहि गच्छह्य ।

[सखि बाणपुत्ति ! तव तातस्य गृहे आनन्दध्वनिः श्रूयते, तद्वयमपि तत्र  
गच्छामः ।]

(इति निष्क्रान्तास्सर्वाः ।)

इति उपावहलाभो नाम प्रथमोऽङ्कः ॥

## अथ द्वितीयोऽङ्कः

( ततः प्रविशति बाणासुरः )

( राग परज, गीत सं०—८ )

बाणनृपति जब देल परवेश

कापसि धरती कच्छप सेव ।

सहस्र बाहु, गिरि सदृश शरीर,

नयन निरखि केओ रहय न थीर ।

मांसपान कर लोचन लाल,

काल सदृश तनु, वदन कराल ।

सकल भुवन जल तण सम जान,

भुजबल राख अधिक अभिमान ।

चित्र०—सखी बाणपुत्री ! अहाँक पिताक घर मे आनन्दक शब्द सुनि पड़ेछ,  
तेँ हमरहुलोकनि ओतहि जाइ ।

[सभ बहार भेलि]

इति उपाक घर लाभ नामक प्रथम अङ्क समाप्त ॥

द्वितीय अङ्क

[बाणासुर प्रवेश करै छवि ।]

[ गीत सं०—८ ]

गिरि सदृश = पहाड़क समान । तनु = देह । कराल = डराओन । तण =

रसमय हर्षनाथकवि गाव,

श्रीलक्ष्मीदेवरसिंह बुझु भाव ॥

बाणः—कः कोऽय भोः !

(प्रविश्य)

दीवारिकः—जअहु जअहु देओ ।

[ जयतु जयतु देवः । ]

बाणः—दीवारिक सत्वरं मन्त्रिराज कुम्भाण्डं प्रवेक्ष्य ।

दीवारिकः—यबाणवेदि देओ । (इति निष्क्रान्तः) ।

[ यबाजापयति देवः । ]

( राग परज, गीत सं०—९ )

भूत वचन सुनि नृपति निदेश,

शङ्कित मन्त्रिराज परवेश ।

मन गुनि कत विष करथि विचार

कोन परि सेव नृप-दरबार ।

निरखि हमर अति सुन्दर रीति

किबहु होएत नृप मानस प्रीति ।

कोदहु हमर जानि किछ दोष,

बाणनृपति मन उपजत रोष ।

अनुछन मन चिन्तित हो आज

परम कठिन नृप सेवन काज ।

सम = सहक समान ॥

बाण के सभ एतय अछि ?

[ प्रवेश कय ]

दीवारिक—देवक जय हो, जय हो ।

बाण—दीवारिक ! भटवय मन्त्रिराज कुम्भाण्डके प्रवेश कराबहु ।

दीवारिक—देवक जे आज्ञा । (बहार भय गेल ।)

[ गीत सं०—९ ]

निदेश = आज्ञा से । शङ्कित = शङ्का से युक्त । कत-विष = कतेको प्रकारक ॥



हर्षनाथकवि मन दय गाव

नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुजु भाव ॥

कुम्भाण्डः—जयति जयति महाराजः ।

बाणः—मन्त्रिराज, इहास्वताम (इत्यालिङ्ग्योपवेशयति) ।

कुम्भाण्डः—(उपविश्य) देव, हर्षविशेषो लक्ष्यते, तत्किं हरप्रसादेन कोऽपि वरो लभ्यः ?

बाणः—अथ किम् ।

कुम्भाण्डः—विशेषेण कथम् ।

बाणः—कात्तिकेयवत्सव्यजपतनेन महद्युद्धमिति ।

कुम्भाण्डः—महाराज, कुसुष्टिपुष्टोऽसि, न मद्रं कृतं, नूनमनेन वरेणामुरकुलं क्षयं यास्यति ।

बाणः—(सरोधम्) आः पाप कुम्भाण्ड ! ब्रह्माण्डस्फोटनं वाचा करोषि । नाहं कस्मादपि विभेमि । शृणु रे संग्रामकातर !

कुम्भाण्डः—महाराज विजयी होधु ।

बाणः—मन्त्रिराज ! एतय वेंमू । (आलिङ्गन कय बैसवेंत छवि ।)

कुम्भा०—(बैसि) देव ! विशेष आनन्द बुझाइछ की महादेवक प्रसाद सँ कोनो वर पाओल छछि ?

बाणः—त आओर की ?

कुम्भा०—विशेष रूपे वहु ।

बाणः—कात्तिकेयक देल ध्वजाक खसला सँ महान् युद्ध होयत ।

कुम्भा०—महाराज ! अधलाह कार्य मे पड़ि गेल छी, नीक नहि कयल । निश्चिन एहि वरदान सँ अमुरकुलक क्षय होयत ।

बाणः—(तमसाय) आः पाप कुम्भाण्ड ! वचन सँ हमर ब्रह्माण्ड फोड़ि रहल छह । हम ककरहु सँ नहि बरास्त छी । सुन रे यद्ध सँ डरयनिहार !—

इन्द्रादयो मम जंसास्त्रबाहुसङ्गोपना पराः ।

परे के सन्ति भुवन ये योस्त्वन्ति मया सह ॥४॥

कुम्भाण्डः—यथा ववति देवः ।

(ततः प्रवर्तति मयूरध्वजः ।)

बाणः—(दृष्ट्वा सहर्षं) पश्य पश्य मन्त्रिराज ! पतितो मयूरध्वजः । तन्मूनमचिरेण मम बाहुसहस्रधारणं सफलतामेधमति । तदेहि, गौरीशङ्कराभ्यां पुष्पाञ्जलिदानाय ।

(इति निष्क्रान्ती)

(इति विश्वकम्भकः ।)

(ततः प्रतिपद्यति रामाचिभलेखाभ्यां सहिता पुरुषसङ्गचिह्नता उषा)

उषा—(सबैवलम्बम्)—(राम कलिङ्गदा, गीत सं०—१०)

सपन देखल एक नागर धीर

तन्हि मोर घषित कयल करीर ।

हमरा डरे इन्द्र आदि देवता अपन देह मुकावय लगैत छथि आ जान के एहि भुवन मे अछि जे हमरा संग युद्ध करत ? ॥४॥

कुम्भा०—जे कहैत छी देव सएह ठीक ।

[तखन मयूरध्वज खसैत अछि ।]

बाण—(देखि सहर्षं) देख, देख, मन्त्रिराज ! खसल मयूरध्वज । से आब निश्चय हमर हजार बाहि छारण करव सफल होयत । हाँ आउ, गौरी-शंकर के पुष्पाञ्जलि देवाक हेतु ।

[बहु बहार भेलाह ।]

[इति विश्वकम्भक]

[तखन रामा ओ बिजलेखाक संग पुरुष-सर्पकक चिह्न सँ युक्त उषा प्रवेश करैत छथि ।]

उषा—(विकलता सँ)—

[गीतसं०—१०]

नागर धीर = चतुर नायक गम्भीर । घषित = मर्दित । चिकुर = केश ।



फुल्ल चिकुर फुल्ल मोर चीर,  
 अभरण एक रहल नहि धीर ।  
 आसन मलिन घाम भरि गेल,  
 कोन पुरुष मोहि सङ्गम देल ।  
 भल छल मरण होइत बर आज,  
 के की कहत तकर हो लाज ।  
 रसमय हर्षनाथकवि भान,  
 नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान ॥

(इति शिरसि हस्तत्रिषाय कलङ्कबाधाघाटाटयति ।)

रामा—(सविश्रम्भम्) सहि । समस्ससिहि सपस्ससिहि । न खलु कोपि  
 तुज्ज दोसो हुविसिदि । सुमिरेहि, सुमिरेहि देइए गोरिए वयणं ।  
 (इति सर्वं स्मारयति ।)

[सखि ! समाश्रयसिहि समाश्रयसिहि । न खलु तव कोपि दोषो भविष्यति ।  
 स्मर स्मर देव्या गौध्या वचनम् ।]

उवा—(सामन्दलज्जं स्मरणमभिनयति)।

रामा—सहि ! लट्ठमणोरहा तुमी । ता कवेहि विसेसेण सविणवृत्ति ।

[सखि ! लट्ठमनोरथा रथं, तत्कथय विशेषेण स्वप्नवृत्तम् ।]

उवा—(सलज्जं गीतेन कथयति) —

चीर = वस्त्र । अभरण = गहना ॥

(माथ पर हाथ दम कलङ्क लगवाक बाधाक अभिनय करैत छथि ।)

रामा—(आश्चर्य करैत) सखी ! धर्यं धरु । अहाँक कोनो दोष नहि  
 होयत । मोन पाड़ू देवी गौरीक वचन । (सभटा स्मरण कर-  
 बैत छथि ।)

उवा—(आनन्द ओ लाज सहित मोन पाड़ूवाक अभिनय करैत छथि ।)

रामा—सखी ! अहाँ मनोरथ केँ तँ पाओल । आव कहू विशेषरूपेँ स्वप्नक  
 वृत्तान्त ।

उवा—(लज्जा सहित गीतक द्वारा कहैत छथि:—)

सोहनी, गीत सं०—११

सखि हे, यतन दय सुनु मोर बानी,  
 करिय उपाय हृदय अनुमानी ।  
 सपन समय एक सुन्दर रूपे,  
 देखल नागर मदन सङ्गमे ।  
 तसु मुख लाख तनु पुलकित भेला,  
 तन्हि पुनि हसि मोहि कर लेला ।  
 रसमय वचन बोलथि पुनु धीरे,  
 कोन परि रहओ तखन चित धीरे ॥  
 तखनुक अवसर कि कहब तोही,  
 कहइत लाज निवारय मोही ।  
 रसमय हर्षनाथकवि भाने,  
 नृपलक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

अथ च— (राम मालव, गीत सं०—१२)

सुनु पखि ओ रे, सरस देखल अनि सुपुष्य,  
 तसु मुख, सुमरि सुमरि होअ कत दुख ।  
 तनि विनु ओ रे, जत अछि एहि जगती तल,  
 क्षीतल, से सभ दुख दय बीतल ।  
 जग भरि ओ रे, घर घर हँसअ सकल जन,  
 मोर मन, तन्हि विनु धिर नहि कउखन ।  
 तन्हि पहु ओ रे, होएत समामम कौनपरि,  
 हरिहरि, करिय उपाय यतन भरि ।

[ गीत सं०—११ ]

यतन = यत्न । नागर = चतुर नायक । मदन-सङ्गमे = कामदेवक स्वं-  
 रूपमे । कर लेला = हाथ धयलनि । निवारय = रोकैछ ।

आओर,

[ गीत सं०—१२ ]

जगतीतल = संसार मे । हरि हरि = हाय हाय ! यतन भरि = शक



छनछन ओ रे, मदन-दहन वह मोर तनु,  
सखि सुनु, भाव न जिउव हम सहि बिनु ।  
रसबुधु ओ रे, लक्ष्मीश्वरसिंह गुणमय,  
मनदय, हर्षनाथ भन रसमय ॥

(इति विरहवेदनामभिनयति ।)

रामा—सहि ! समस्तसिहि समस्तसिहि ।

[सखि ! समाश्वसिहि, समाश्वसिहि ।]

(चित्रलेखाम्प्रति) सहि चित्रलेहे ! को उवाओ हुविसदि ।

[सखि चित्रलेहे ! क उपायो भविष्यति ।]

चित्र० - कोरियो अविज्जादजनसम्भमोवाओ ।

[कोदृष्टोऽविज्ञातजनसङ्गमोपायः ।]

उवा - एवं चित्र मज्जीअजं पि दुल्लहं हुविसदि (इति मूर्च्छति) ।

[एवञ्चेमज्जीवनमपि दुर्लभं भविष्यति ।]

रामा - समस्तसिहि समस्तसिहि [समाश्वसिहि समाश्वसिहि ।]

(इत्युत्थाप्य नलिनीदलेन वीजयति) ।

चित्र० - (जलं सिञ्चति) ।

महि । मदन-दहन = कामदेवरूपी अग्नि । वह = जरबैछ । तनु = देह ।

( विरह-वेदनाक अभिनय करत छथि ।)

रामा—सखि ! धैर्य धरु, धैर्य धरु । (चित्रलेखाक प्रति) सखी चित्रलेखा !  
कोन उपाय होयत ?

चित्र०—अज्ञात व्यक्तिक संगमक उपाय केहन होयत ?

उवा—जै एना होत हमर जीवनो दुर्लभ होयत । (मूर्च्छित होइत छथि ।)

रामा—धैर्य धरु, धैर्य धरु । (उवायके पुरइतिक पात सँ हौं केत छथि ।)

चित्र०—(जल छिटेत छथि ।)

उवा - (संज्ञा लब्ध्वा सर्ववलयम् ।) -

राग मालव, गीत सं० - १३

पहु बिनु किछु नहि भावय रे, कि करव परकारे ।  
कोन परि होएव समागम रे, सखि करहु बिचारे ॥  
मलय पवन नलिनी-दल रे, चानन घनसारे ।  
परसि अधिक तनु तापय रे, जनि निधुम अंगारे ॥  
सुमरि सुमरि तसु आनन रे, पीयूष तम बानी ।  
अनुछन रहत विकल मन रे, सखि सुनहु सेआनी ।  
जओ नहि होयत समागम रे, कि कहव सखि आने ।  
आनि मरल घोरि पीउव रे, हम तेजव पराने ॥  
हर्षनाथ कविशेखर रे, रसमय इहो गावे ।  
लक्ष्मीश्वरसिंह गुणमय रे, मन दय बुझु भावे ॥

(ततश्चन्द्रकरस्पर्शेन दुःखमनुभूय मूर्च्छति । सखी वीजयतः ।

पुनः संज्ञा लब्ध्वा गीतेन कथयति)--

सोहनी, गीत सं०--१४

सखि सखि ! करहु एकर उपचारे ।

रहत भिषल मन, दहत सतत तन, चान किरण दुरचारे ॥

उवा—(होश पावे विकलता सहित)--

[गीत सं०--१३]

भावय = सोहाइछ । परकारे = उपाय । मलय-पवन = मलय पर्वतक  
वसात । नलिनी-दल = पुरइतिक पात । घनसार = कपूर । परसि = छुधि ।  
तनु तापय = देहके तप्त करैछ । निधुम = विनु शूनाक । पीयूषतम = अमृ-  
तक समान । मरल = विग ।

[ततश्च चन्द्रमाक किरणक स्पर्शे सौ दुःख पावे मूर्च्छित होइत छथि । दुहु  
सखी पंखा हौं केत छथि । फेर होय पावे गीतक द्वारा कहैत छथि - ]

[गीत सं०--१४]

I—दहन = जरबैछ । सतत = हरदम । तन = देह । दुरचारे = अश-



कुमुदबन्धु क्षिरसिन्धुतनूभव कुम्भ कुसुम सम धामे ।

एहन चानि तन-दहत सतत क्षण, असित हृदय परिनामे ॥१॥

(एतदर्थे श्लोकः)

क्षीराक्षिजातः कुमुदस्य बन्धुः कुम्भसूनमतिमाधुर्यः ।

तथापि चन्द्रस्तनुशङ्करी स एव हृत्प्यामलतास्वभावः ॥१॥

बड़वानल अको उबर मोड़ धर, किए जलनिधि नहि जाने ।

कालकूट सम जानि मदनहर, किय न कमल तसु पाने ॥१॥

(अत्रार्थे श्लोकः)

क्षीर्वाग्निवन्तो क्षशिनं जुगोप यद्यप्यरेतं विषयमुच्यते ।

कूर्मस्तथाप्येनमुदीक्ष्य क्षभुः पयो दयालुविषयवन्त कस्मात् ॥१॥

राहुदघन विष जाव जिवए पुनि, क्षशि विरहित जिवधाती ।

तसु डर यमहु डेराधि जगत मह, जे जन अति उतपानी ॥२॥

ध्या । कुमुद-बन्धु = कुमुद फूलक भिन्न । क्षिर सिन्धु तनूभव = क्षीरसमुद्रक देह ही उत्पन्न । कुम्भ कुसुमसमधामे = कुम्भ-फलक समान छविवाला । असित-हृदय = कारी हृदय (चन्द्रमाक सत्त कृष्ण हृदय मे अलङ्कारुप वर्णमाक परिणाम धिक) ॥

(एहि अर्थ मे श्लोक) —

ई चन्द्रमा क्षीरसागर ही उत्पन्न, कुमुदक-बन्धु ओ कुम्भ फूलक छविक समान किरणवाला छवि तथापि देह मे साप उत्पन्न करैत छवि — से ई हिनक हृदयक कालुष्यक (कारी रहनाइक) स्वभाव धिक ॥ १॥

॥ — बड़वानल = समुद्रक आगि । कालकूट = विष । मदनहर = महा-देव । तसु = हुनक (चन्द्रमाक) ॥

(एहि अर्थ मे श्लोक) —

जै समुद्र एहि चन्द्रमाके बड़वानल जकी नुकाय नहि लेलति, अपितु विष जकी छोड़ि देलति ही हिनका कूर देखि दयालु महादेव विष जकी पीवि कियेक नहि मेलाह ॥ १॥

(एतस्मिन्वर्धे श्लोकः)

स्वर्भानुपटोऽपि जहाति नासुस्थियोमिनो प्राणहरः सुधाशुः ।

वितर्कयामि स्फुटमथ जेन यमोऽपि दुष्कान्तिराभिवभेति ॥३॥

धैरज धम रहू, अचिर मिलत पहु, होएत सुधीतल खाने ।

नृप लक्ष्मीदेवरसिह तुलधि रस, हर्षनाथकवि भाने ॥४॥

(इति मृच्छंति ।)

रामा — (उषाया नाडीनिरूप्य संस्कृतमाधिर्य)

कदाचिद्वलते नाडी कदाचिद्विस्थिरताङ्गता ।

एतन्निरूपणेनास्या जायते चरमा दशा ॥५॥

हा हृदय, को उषाओ हृदिस्तदि । [हा हृताऽस्मि, क ख्यायो भविष्यति ।] (चित्रलेखाप्रति) सहि चिसलेहे ! पेक्ख पेक्ख सहीए अवत्थं । [सखि चित्रलेखे ! त्वय पश्य सकृदा अवस्थाम् ।]

III — राहुदघन-विष = राहुग्रहक दांतक बीच मे । क्षशि = चन्द्रमा । जिवधाती = प्राणनाशक । यमहु = यमराजो ॥

(एहि अर्थ मे श्लोक) —

राहुसी प्रसित भेलहु पर ई चन्द्रमा प्राण नहि त्यागैत छवि, अपि तु विधोनीक प्राण हरैत छवि ताहि ही राष्ट तर्क करैत छी जे यमराजो दुष्टसभ निरप्यत डराइत छवि ॥ १॥

IV — अचिर = मोछे । सुधीतल = अतिठण्डा ॥

(मुच्छिन्न होइत छवि ।)

रामा — (उषाक नाडी देखि संस्कृतक आशय लय) —

नाडी कलनहु चलेछ ओ कलनहु स्थिर भय जाइछ । एकरा देखला ही हिनक अश्विम दशा बुझाइछ ॥ ५॥

हाय ! मुझहु !! कोन उपाय होयत ? (चित्रलेखाक प्रति) सखी चित्रलेखा ! देख, देख सखीक अवस्था ।



## सोहनी, गीत सं०-१५

कि कहव हे सखि ! घनिक विशेष,  
 आव न जिउति अतिविरह कलेश ।  
 परस दग्ध सेज कि कहव तोहि,  
 ते तसु जीव न निश्चय मोहि ।  
 तसु तनुवेदन देखल न आय,  
 वसन भूषण ते भूमि लोटाए ।  
 नाहिक भेद युक्त अनुकूल,  
 कर कङ्कण गेल बाहुक मूल ।  
 कीदहु विवर्त अछि सुकुमारि,  
 बुझय चिकुर उर परसि विचारि ।  
 रसमय हर्षनाथकवि भान,  
 नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान ॥  
 (हृत्पुत्रे विलपतः ।)

चित्र०—हा हृदय ! कथं उण सहीए प्रियजनं जानिसस ।  
 [हा हतास्मि । कथं पुनः सख्याः प्रियजनं जास्यामि ।]  
 रामा—(संस्कृतमाश्रित्य)—

[गीत सं०-१५]

घनिक विशेष = धन्य एहि सखीक हालति । परस दग्ध सेज = हृदिक  
 ओछानक स्पर्श ही देह जरैछ । तनुवेदन = देहक वेदना । वसन = वस्त्र ।  
 चिकुर उर परसि = केश छातीक स्पर्श कय ॥

(दूह विलाप करै छथि ।)

चित्र०—हाय मुदलहु ! कोना कय सखीक प्रिय व्यक्ति के जानस ?  
 रामा—(संस्कृतक अवलम्बन कय) —

मुहुर्भातिमुहुर्भूच्छा मुहुस्संजा मुहुर्जतिः ।  
 सखीहृदयबाधा हि हस्तास्मास्वपि दृश्यते ॥

(चित्रलेखाप्रति गीतेन)

सोहनी, गीत सं०-१६

हे सखि हे सखि ! करहु उपाय,  
 विरह वेदन सखि ! सहलो न आय ।  
 सयन पुरुषरूप मन अवधारी,  
 लय पट विभूषन लिखहु विचारी ।  
 सब तर चोहहु तोहि नारी,  
 अपन सखी कहू लागु मोहरी ।  
 सखि मोर तसु रूप मन अवधारी,  
 पट देखि निज प्रिय चिन्हति विचारी ।  
 रसमय हर्षनाथ कवि भाने,  
 नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

चित्र०—(नशिरःकम्पं) सहि ! रमणिलज्जं वल्लु मणितदं [सखि ! रम-  
 णीयं खलु मन्त्रितम् ।] (इति तथा करोति) ।

बारंबार भ्रम, बारंबार मूर्च्छा, बारंबार शोश ओ बारंबार धैर्य—ई  
 सब जे सखीक हृदय मे बाधा उस्थित अछि से हाय ! हमरहु सब मे देखल  
 जावछ ॥१॥

(चित्रलेखाक प्रति गीतक द्वारा) —

गीत सं०-१६

सयन = शयनकक्ष मे । पुरुषरूप मन अवधारी = मन मे सुन्दर पुरुष  
 सभक रूपक ध्यान कय । पट = चित्रपट = चित्र लिखवाक कपड़ा । विभू-  
 षन = तीनहुँ लोक मे स्थित युवकके । सबतर = सभठाम । सब = सभ के ।  
 मोहारी = रक्षाक उपाय । तसु रूप = तनिक (मनमे स्थित पुरुषक) रूपके ।  
 अवधारी = विचारि ॥

चित्र०—(मौन हिलवैत) सखी ! बड़ दीव विचार कयलहु अछि । (तहिना  
 करै छथि ।)



संज्ञौटी, गीत सं०-- १७

लेख कर गहि ललित लिखनी सकल संग अनाए ओ ।  
 लिखि मन दय चित्रलेखा विविध पट्ट बनाए ओ ॥  
 देव दानव सिद्ध चारण यक्ष राक्षस किन्नरा ।  
 लिलल रणकुल सकल यदुकुल जतेक अछि जग नरवरा ॥  
 लेख कर गहि बाणतनया देखल पट मनलाए ओ ।  
 निरखि अनिरुध रूप मन गुनि अंगुरि देल देलाए ओ ॥  
 कयल सखिसँ अधिक विनती करह सज्ज उपाए ओ ।  
 हर्षनाथ विचारि भन गिरिजा चरण हिय लाए ओ ॥

चित्र०—(सशोक) एसो बलु समुद्रमग्ननिर्मिदोआरवदीणअरमग्ने  
 वसह, ता कठिनो अरु सभमोवाओ । [एव खलु समुद्रमध्यनिर्मि-  
 तद्वारवतीनगरमध्ये वसति, तत्कठिनोऽस्य सज्जगोपायः ।

उपा—(सोत्कण्ठम्)—

(राम योगिया, गीत सं०—१८)

जाहू द्वारिका आजै, तेहि लाजै, मन दय कर मोर काजै ॥  
 योगबल तोहँ सब ठामे, निज कामे, करह गमन अनुपामे ॥

[गीत सं०—१७]

लेख = लिखित अछि । कर गहि = हाथ सँ पकड़ि । ललित लिखनी =  
 सुन्दर कलम (तुलिका) । नरवरा = उत्तम मनुष्य । अनिरुध = अनिरुद्ध  
 (श्रीकृष्णक पौत्र) ॥

चित्र०—(शोक सहित) ई तँ समुद्रक बीच मे बनाओल द्वारका नगर मे बसैत  
 छथि । तेँ हिनक समागम कठिन अछि ।

उपा—(उत्कण्ठ सहित)—

[गीत सं०—१८]

योगबल = योगसिद्धिक बले । अनुपामे = अपूर्ण । वेआजै = लाय ।

१० संज्ञौटी ।

जौ तोहँ करह वेआजै, मोर काजै, हम न असब सखि । आजै ॥  
 दक्षिणपवन भेल वामे, परिनामे, हनय मदन मोहि ठामे ॥  
 हर्षनाथकवि भावे, परमाने, मिथिलापति रस जाने ।  
 (इति चित्रलेखाचरणयो निवर्तति)

चित्र०—(आलिङ्गनोपदेश्य सकलणम्)—

(दोहा)

जाए द्वारका आज हम कामतनय यदुवीर ।  
 आनि मिलाएब ताहि संग, धरह सुचेतनि ! धीर ॥

(इति सत्वरगमनमभिनयति) ।

उपा—(निरुप्य) कथं गदा जेब पियसही चितालेहा ? [ कथं गतेव  
 प्रियसखी चित्रलेखा ? ] (रामाभ्रप्रति संस्कृतमाश्रित्य) —

बहुविनयविताने प्रेरिता चित्रलेखा

कुसुममुद्रुलदेहा कामिनी दू-देशम् ।

अधिवितबहुभारा द्वारका सा प्रतस्थे

परहि-करणेच्छ न स्मरथास्मवधाम् ॥१०॥

वक्षिण पवन = दक्षिणाही हवा (मल्लानिल) । वामे = विपरीत । परि-  
 नामे = अन्तिम अवस्था । हनय मदन = कामदेव मारेत छथि ॥

(चित्रलेखाक पसर पर बसैत छथि ।)

चित्र०—(आलिङ्गन कय वैयास करणापूर्वक) —

(दोहा) —

कामतनय = कामदेवक पुत्र अनिरुद्ध केँ । यदुवीर = यदुवंश मे परा-  
 कर्मी ॥ (शीघ्र जयवाक अभिनय करैत छथि ।)

उपा—(देखि) की चल गेलीहि प्रियसखी चित्रलेखा ? (रामाक प्रति संस्कृतक  
 आश्रय लय) —

बहुत विनती क विस्तार सँ प्रेरित भय फूलसनक कोमल देहवाली मुन्दरी  
 चित्रलेखा बहुत भार उठपवा सँ अपरिचित होइत दूरदेश द्वारकाक हेतु प्र-  
 स्थान कयलनि । ओ दोहराक हित करवाक इच्छुक भय प्राण-संकटक  
 विन्ता नहि करैत छथि ॥१०॥



रामा - सहि ! सखे ! [सखि ! सत्यम् ।]  
उषा - ता बहुवि जहा तहा समज-गणपथं पुष्पवाडिअं गच्छहा ।  
[तदावामपि यथा तथा समयनयनार्थं पुष्पवाटिकां गच्छामा ।]

[इति निष्क्रान्ते]

इति चित्रलेखाप्रस्थापनो नाम द्वितीयोऽङ्कः ॥

### अथ तृतीयोऽङ्कः

(ततः प्रविशति पथि अमरनाटयन्ती चित्रलेखा)

चित्र० - एस समुद्रो, इअं सा दोआरिया, इअं वखु अनिरुद्धस्त घर, ता  
एतय प्रविशामि [एस समुद्रः, इअं सा द्वारिका, इअं खलु अनिरुद्धस्य  
गृहं तदत्र प्रविशामि ।] (इति प्रवेशमभिनयति ।)

(ततः प्रविशति चिन्ताकुलोऽनिरुद्धः ।)

अनि० - (सदैवलक्ष्यम्)

रामा - सखी ! सत्य ।

उषा - तौ अपनोलोकनि जेना-जेना समय बितयवाक लेल फुलवाडी चली ।  
(बाहर भय गेलि ।)

॥ इति चित्रलेखाक विदा करव नामक दोसर अंक समाप्त ॥

तृतीय अङ्क

[तखन वाट मे परिश्रमक अभिनय करैत चित्रलेखा प्रवेश करैत छथि ।]

चित्र० - ई समुद्र थिक । ई ओ द्वारिका थिक । ई अनिरुद्धक घर थिक ।  
हौ एतय प्रवेश करैत छी । (प्रवेश करवाक अभिनय करैत छथि ।)

[तखन चिन्ता सौ व्याकुल अनिरुद्ध प्रवेश करैत छथि ।]

अनिरुद्ध - (विकलतापूर्वक) हाथीक समान कोमल गतिवाली, तथा कोधधु मे

मातङ्गेन समानकोमलगतिः कोपे तथा कोमला  
मृदङ्गी मृदुभाषिणी मृदुवया हास्येऽपि या कोमला ।  
स्वप्ने मां समुपायता विश्वकशास्तत्त्वहिना कोमला  
जाता सा कठिना कथं मम पुन हं स्वीय चित्तङ्गता ॥११॥  
अपि चे-

सोहनी, गीत सं०-१६

हरि हरि देखल अपरूप रामा ।  
देखइत जनम सुफल कय मानल, पूरल लोचनकामा ॥  
तड़ित-चपल रुचि कठिन कतकमय-बली करि अवधाने ।  
निजकोशल परगासन कञ्जज, तसु तसु कह निरमाने ॥  
मदन-धनुष हरनयन-बहुन तहूँ, श्यामल केशर शेषे ।  
लखि चतुरानन भाग जुमल करि, कह तसु भौह बिशेषे ॥  
मृग अञ्जन खज्जन मदगञ्जन, लोचन सम निज काँती ।  
मानल पञ्जुज तैं जनि कञ्ज, निज पद देल तसु छाती ॥

कोमल, कोमल शङ्खवाली, कोमल बचनवाली कोमल अवस्थावाली,  
हँसियो मे कोमल, तथा सभ तरहेँ के कोमल भए भाग्य सँ हमर  
स्वप्न मे हमरा लग अमलीहि से कठोर कोना भय गेलीहि आ हमर  
चित्तके 'बोरायके' चल गेलीहि ॥११॥

आओर,

[ गीत सं०-१६ ]

अपरूप रामा = अपूर्ण सुन्दरी । लोचन-कामा = आँखिक मनोरम ॥  
तड़ित-चपल रुचि = बिजलीका सन चञ्चल कान्ति सँ युक्त । कतकमय बली  
= मोनाक लसी । अवधाने = निश्चय । परगासन = प्रकाशित करवाक लेल ।  
कञ्जज = शृङ्गा ॥ मदन-धनुष = कामदेवक धनुष । हरनयन-बहुन = महा-  
देवक आँखि सँ जखनका आरण । श्यामल-केशर-शेषे = काली मूलाक रेखा (धृत)  
क रूप मे अवशेष रहल । चतुरानन = शृङ्गा । भाग जुमल = दुष्ट प्राण (जरल  
कारी मनुष्यक) ॥ मृग - ... - तसु छाती = हरिण आँजन ओ खञ्जनक



अमल-कमलमुख लखि रजनीकर, अन्तर दयामल काँती ।  
कनककुम्भ कुच-युगल दम्भ लखि, विदलित दाड़िम छापी ॥  
दाड़िम कीज दशन, बन्धुकमय दशनवसन निरमाने ।  
नृप लक्ष्मीवरासिंह बुझाये रस, हर्षनाथ कवि भाँसे ॥  
अपि च—

राग देश, गीत सं० -- २०

रे मोर प्राण पिघारी, सुकुमारी ।  
कलम भिलति वरमारी ॥  
सपन दास मोहि बेला, बिहू बेला ।  
कओन हरत कय केला ॥  
छोचन विषमय बाने, नहि आने ।  
जे मोह हरल पराने ॥  
कि करव हम परकारे सतसारे ।  
तनि धिमु जामु अन्हारे ॥  
हर्षनाथकवि भाँसे, परमाने ।  
मिथिलापति रस जाने ॥  
( इति चिन्तामोहनवर्णितः )

गर्भकें चूर करव बला जे नापिकाक अखि-तकरा सनक अपन कान्ति मानक  
कमल, तें ब्रह्मा (कञ्जज) सिधियाय केँ कमलक छापी पर पवर रखते छथि ।  
अमल = स्वच्छ । रजनीकर = चन्द्रमा । अन्तर = हृदय मे । कनक-कुम्भ =  
सीताक खेल सनक । कुचयुगल दम्भ = दुनू स्तनक गर्वकेँ । विदलित = फाँटि  
रेल । दशन = दाँत । बन्धुकमय = मधुरीक फलक स्वरूप । दशन-वसन =  
ढोर ।

[ गीत सं०—२० ]

आओर,  
वरमारी = श्रेष्ठ रमणी । बिहू = भाग्य, विधाता । सतसारे = संसार  
जे । परकारे = उपाय ॥  
(चिन्ताक अभिनय करैत छथि ।)

चित्र०—कहाँ एसो सी अनिरुद्धो किमि चिन्ताआणी छिटुई ता माथवरस हिमद  
तपकेमि । [ कथमेसांसावनिरुद्धः किमपि चिन्तयन् निरुद्धति, तथाचदस्य  
हृदयतं पथकयामि । ] ( इत्यपावाच्यं सिध्यति । )

अनि०—( पुनः मति जे नेत्यादि पठति । )

चित्र०—( निपुणनिरूप्य ) यं एदेण अस्म अन्नणोवणासेण तपसीअदि,  
एदेणानि अणेण अहाणं सा निअसही सधिणे विट्ठा, ता विरसद्धं उअ-  
सयामि [ तथेतेनःस्य नचसीअस्यासेन तपस्यये, एतेनापि अनेनास्माकं  
सा भियसखी स्वप्ने दण्डा, तद्विथअमुपसयामि । ] ( इत्युपसर्पति । )

अनि०—( दृष्ट्वा सहर्षं ) कथामियं चित्रलेखा ? चित्रलेखे एसोऽनिरुद्धः प्रणमति ।

चित्र०—सम्पणमनोरहो होहि । [ सम्पन्नमनोरहो भव । ]

अनि०—( स्वगतम् ) परमपुण्यहीतोऽस्मि । ( प्रकाशं ) चित्रलेखे ! सकलैश्चक्षु-  
क्याः सिद्धयोगिन्याः किमवागमने प्रयोजनं भवत्याः ।

चित्र०—( गीतेन कथयति । )--

चित्र०—सी ई उषेह अनिरुद्ध किछु चिन्ता करैत ठाढ़ छथि ? रौ कनेक  
हिनक हयक भाव बसत छी । ( अड़ मग रहैत छथि । )

अनि०—( केर "मान-झूत" बलोक सं०—११ पढ़ैत छथि । )

चित्र०—( नीकजकी देखि ) निश्चय हिनक एहि बचनक उद्गार रौ तर्क  
कयल जाइछ जे इहो अपति हमर प्रियमाखीकेँ स्वप्न में देखलनि  
अछि । रौ निर्भीक भय लग जाइत छी । ( लग जाइत छथि । )

अनि०—( देखि गइल ) को ई चित्रलेखा बिहीहि ? चित्रलेखा ! ई अनिरुद्ध  
कहाँ केँ प्रणाम करैत छथि ।

चित्र०—पूज्यमनोरथ होउ ।

अनि०—( स्वगत ) अवश्य अनुग्रहीत ( कृपाप्राप्त ) छी । ( प्रकाश ) चित्र-  
लेखा ! सभ ऐश्वर्य रौ शुक्त सिद्धयोगिनी अहाँक एहिठाम अवकाक  
की प्रयोजन ?

चित्र०—( भीतक द्वारा कहैत छथि )--



राम खम्माच, गीत सं०-२१

सखि मोर बाणकुमारी, तुअ गुण सुबुधलि से वरनारी ॥  
गवन समय तोहि देखो, मिलन मनोरथ करए विशेषी ॥  
तुअ बिनु घरय न धीरे, चेत न चिकुर चेतय नहि चोरे ॥  
अनुछन जप तुअ नामे, मन दप तनिक पुरिअ मनकामे ॥  
हर्षनाथकवि भाने, मय लक्ष्मीधरसिंह रस जाने ॥  
अपि च--

राम केदार, गीत सं०-२२

कि कहव तनिक विशेष, माधव ! कहिनहु होअ कलेश ॥  
आनन करतल राखि, माधव ! दिवस गमावधि जाखि ॥  
मदनदहन यह देख, माधव ! लागु विपिन सम गेह ॥  
निरखि सरसशशि काप, माधव ! मलयपवन तनु ताप ॥  
तुअ सङ्गम अभिलाष, माधव ! छनभरि जीवन राख ॥  
अचिर चलिअ तमु धाम माधव ! पुरिअ तनिक मनकाम ॥  
हर्षनाथकवि भान, माधव ! निधिलापति रस जान ॥

अनि०—चित्रलेखे ! भवत्याः प्रियसखी मयापि स्वप्ने सङ्गता । तदवधि निर्द्वयः  
कन्दर्पो मां विशिष्यैतिकृण्वति । तस्मादनुगृहाण मां शोणितपुरनयनेन ।

[ गीत सं०-२१ ]

सुबुधलि = लोभायलि । वरनारी = उत्तम रमणी । धीरे = धैर्य । चेत  
न चिकुर = केश के नहि समुहारे पश्येछ । चोरे = चोर ।

आखार,

[ गीत सं०-२२ ]

विशेष = अधिक बुद्धि । कलेश = दुःख । आनन करतल = मुँहके  
हाथ पर । जाखि = पल्लवाय । मदन-दहन यह = कामदेवकृपी आगि  
जलवेत अछि । विपिन सम गेह = वन सम घर । सरस-शशि = सरस  
चन्द्रमाके ॥

अनि० • चित्रलेखा ! अहंकि प्रियसखीक हमहुँ स्वप्नमे साक्षात्कार कयल ।  
तखन हां निर्द्वय कामदेव हमरा बाणसी कटैत छथि । तेँ हमरा

(इति चित्रलेखापादयो निवसति) ।

चित्र०—(आलिङ्गन्योपवेश्य) कथं अनुगृहेष्वभित्यगा ? एवं होतु । [कथम-  
नुगृहेष्वभित्यगा ? एवं भवतु ।] (इत्यनिरुद्धेन साङ्गं गमनमभिन-  
यति) ।

चित्र०—देखख यादव-नन्दन ! शोणितपुर पतै । इदं वख पिअसहीए निज्जन  
सअनघर, ता एतय तुम चिट्ठ । अहं पिअसही आनेमि । [प्रोक्षस्व  
यादव-नन्दन ! शोणितपुर प्राप्तम् । इदं खलु प्रियसख्या निज्जन  
सअनगृहं, तदत्र खं तिष्ठ । अहं प्रियसखीमानयामि । (इति  
निष्क्रान्ता) ।

अनि०—

सोरठा, गीत सं०-२३

कखन आवति धनि पासे, पुरत हृदय अभिलासे ॥  
रूपुर अवद मुनि काने, कखन होयत परमाने ॥  
कवन देखव भरि आखी, रहय न घेरज राजी ॥  
एखनूक एक छन मोही, कोठि कलय सम होही ॥  
हर्षनाथ कवि भाने, आरत नहि परमाने ॥

(इत्युपस्थाप्याटयति) ।

शोणितपुर लय जयबाक कृपा करु । (चित्रलेखाक पाएर पर खसैत  
छथि) ।

चित्र० • (आलिङ्गन कय बीमाय) की अनुग्रहो मे प्रार्थना होइछ ? एहने होयत ।  
(अनिरुद्धक संग जयबाक अभिनय करैत छथि) ।

चित्र० • देख, यादव-नन्दन ! शोणितपुर आवि गेलहुँ । ई धिक प्रियसखीक  
एकाक्ष सुतवाक घर । तेँ एतय अही रहूँ । हम प्रियसखीकेँ अनंत  
छी । (बहार भेलि) ।

अनि० •

[ गीत सं० - २३ ]

परमाने = विश्वास । कोठि कलय सम = कड़ोरो कथक समान ॥  
(उपस्थाक अभिनय करैत छथि) ।



(ततः प्रविशति चित्रलेखा)

चित्र०—इयं पुष्पवाटिका, एतथ प्रियसखी हुविस्सदि, ता एतथ प्रविशामि ।  
[इयं पुष्पवाटिका, अथ प्रियसखी भविष्यति तदथ प्रविशामि ।]  
(इति प्रवेशमभिनयति) ।

(ततः प्रविशति उषा रामा च ।)

उषा—कथं अज्जावि ण आअदा पिअसही चित्तलेहा । [कथमद्यापि नागता प्रियसखी चित्रलेखा ?]

रामा—[निपुणस्त्रिरुप्य सहर्षं] पेवस पेवस, इअं आअदा सा । [प्रेक्षस्व, प्रेक्षस्व, इयमागता सा ।]

उषा—[दृष्ट्वा सहर्षमालिङ्ग्य] सहि ! चिरेण लोअणाणि सीदलेंसि ।  
कथेहि, आणीयो सो जणो ? [सखि ! चिरेण लोचने क्षीतलयसि ।  
कथय कथय, आनीतः स जनः ?]

चित्र०—अथ इ ? [अथ किम् ?]

उषा—कहि चिट्ठदि ? [कुत्र तिष्ठति ।]

चित्र०—सुज्झ सअणधरे चिट्ठदि । ता सुमं पि अहिंसारोचिद-वेशं कदुअ

[तस्मिन् चित्रलेखा प्रवेशं करोति छधि ।]

चित्र०—ई फुलवाडी धिक, एतथ प्रियसखी होयतीहि, त एतथ प्रवेशं करोति छी । [प्रवेशक अभिनयं करोति छधि ।]

[तस्मिन् उषा ओ रामा प्रवेशं करोति छधि ।]

उषा—कियेक एअन धरि प्रियसखी चित्रलेखा नहि अयलीहि ?

रामा—[नीकजकां देखि सहर्षं] देखु देखु, इयेह अयलीहि ओ ।

उषा—[देखि सहर्षं आलिङ्गनं कय] बडीकाल पर आंखि जुड़ओलहुं । कहू, अनलहुं ओहि व्यक्ति के ?

चित्र०—त आओर की ?

उषा—कतथ छधि ?

चित्र०—अहाँक शयनगृह मे छधि । ते अहाँ अभिसारक उचित वेश बनाय

तस्य अहिसर । [तत्र शयनगृहे तिष्ठति । तदथमपि अभिसारोचितवेशं कृत्वा तत्राभिसर ।]

रामा— कल्याण, गीत सं०—२४

अभरन वसन करिअ तनु साजे,  
स्वरित चलिअ सखि पटुक समाजे ॥  
जखन शयनगृह करिअ पयाने,  
छन भरि करअ हृदय समधाने ॥  
ठाढ़ि रहब मुख झापि लजाई,  
हठहि बोलिअ जनु कोटि उपाई ॥  
बहुविध जिनति जनावधि प्रीती,  
तखन करअ सखि नेहक रीती ॥  
रसमय हर्षनाथकवि भाने,  
नृप लक्ष्मीदेवरसिह रस जाने ॥

उषा— सोहनी, गीत सं०—२५

हे सखि हे सखि ! परिहरि मोही,  
करजोरि जिनति करिअ हम तोही ॥  
प्रथम समागम अधिक तरासे,  
सुमरि सुमरि जिय उड़य हतासे ॥

ओतयक लेल प्रस्थान करू ।

रामा— [गीत सं०—२५]

अभरन वसन = गहना ओ कपड़ा । स्वरित = शीघ्र । पयान = प्रस्थान । हृदय समधाने = हृदय के स्थिर कय धैर्य धरव ।

उषा— [गीत सं०—२५]

परिहरि = छोड़ि दिअ । तरासे = डरा पुलक भरय = आनन्दित होइछ ।  
पहुयेहा = पतिगृह ॥



चल्य न चरण मुसय नहि मोही,  
 धाम भरल तन की कह्य तोही ॥  
 पुलक भरय पुनु कापय देहा,  
 हम न जायब सनि हूनि पहुगेहा ॥  
 रसमय हर्षनाथकवि भाने,  
 नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

(ततः सखी हस्तं गृहीत्वा बलाश्रयतः । सा च सभयलज्जं शनैर्गच्छति ।)

रामा—सहि चितलेहे ! पेख पेख सहीए खब । [सखि ! चित्रलेखे ! प्रेक्ष-  
 स्व प्रेक्षस्व सख्या रूपम् ।]

चित्र०—(निपुणनिरूप्य गायति)—

राग केदरा, गीत सं०-२६

चललि क्षयनगृह सुन्दरि, सजनी  
 नील बसन तनु साजि ।  
 कनकलता जनि धौसल, सजनी  
 अविरल मधुकर राजि ॥  
 लटिक विन्धु अब तिनुर सजनी  
 विन्धु विराजित भाल ।  
 जनि पङ्कज दल रवि राशि, सजनी  
 उदित भेल एक काल ॥

[तखन दुहू सखी हाथ पकड़ि बलजोरी लय जाइत छथि । आ ओ  
 डर ओ लाज सं मन्द-मन्द जाइत छथि ।]

रामा - सखी चित्रलेखा ! देखू देखू, सखीक रूप ।

चित्र० - (नीकजकाँ देखि गजैत छथि) -

[गीत सं० - २६]

नीलबसन तनु = देह पर नील रंगक वस्त्र । कनक-लता = सोनाक  
 लता पर । अविरल = सघन । मधुकर राजि = भौंराक समूह ।

ललित दशन- रवि अमुपम, सजनी  
 अघर नवल दल राज ।  
 जनि बन्धूक कुसुम तर, सजनी  
 विकसित कुन्दसमाज ॥  
 चरण जुगल अनुरञ्जित, सजनी  
 ललित जुगल—उह शोभ ।  
 गज-युग पाणि पसारल सजनी  
 जनि नव-परलव लोभ ॥  
 जगजननी पदसेवक, सजनी  
 हर्षनाथकवि गाव ।  
 रसमय लक्ष्मीश्वरसिंह सजनी  
 नृप बुम् मन दय भाव ॥  
 अपि च—

मालवरामे गीतम्-२७

चललि केलिगृह सुन्दरि रे सखि कर रहि लेला ।  
 प्रथम समागम मम मुनि रे, तनु पुलकित भेला ॥  
 ललित कोर मुख-पङ्कज रे, छवि देत विशेषे ।  
 जनि पूरण—शारव-राशि रे, दामिनि परिवेषे ॥  
 चिकुर विरचि कसि बाहल रे, मुख सुन्दर सारे ।  
 अमिअ लोभ क्षति—मण्डल रे, विषयर परसारे ॥

लटिक विन्धु = पतरखड़ीक ठोप । पङ्कज दल = कमलक पत्ती पर ।  
 रवि = सूर्य । राशि = चन्द्र । दशन-रवि = दैतिक चमक । अघर नवल  
 दल = ठोरे नव परलव सेन । राज = शोभित । कुसुम = मधुरीक  
 फूलक । कुन्द-समाज = कुन्द फूलक पाती । अनुरञ्जित = रञ्जल ।  
 जुगल-उद = दूनु जाँव । गज युग = दू गोठ हाथी । पाणि = सुँड़ ॥

आओरो,

[गीत सं० - २७]

तनु = देह । पुलकित = आनन्दित । ललित कोर = सुन्दर किनार  
 (चारु वातक सीमा) । मुख-पङ्कज = मुखकी कमल । छवि =



सुवजन मानस हाटक रे, अगुलन कर चोरी ।  
ने अनि कुचयुग बागल रे, दिव कञ्चुक चोरी ॥  
हर्षनाथ कविशेखर रे, रसमय इहो गावे ।  
लक्ष्मीश्वरसिंह गुणमय रे, मन दय बुझ भावे ॥

(इति सञ्ज्ञाः क्षयनभवनप्रवेशमभिधत्ति ।)

अनि०—(दृष्ट्वा सहर्षं) कथमापतेव मत्प्रियसी ? तयावदेनां निरीक्ष्य लोचने  
शीतलपामि । (इति सानन्दरोमाञ्चं पश्यति ।)

(ततस्तस्मिन् बाणपुत्रीमतिद्वयाय समर्पयतः ।)

अनि०—(करे गृह्णाति) ।

रामा—(अतिरुद्धमति) —

राग इमन्, गीत सं०—२८

सुपक्ष ! हृदये विचारि रे, मुनिअ वचन अवधारि रे ॥  
धनि मोर किल नहि जान रे, राखब हिनक अभिमान रे ॥

सुन्दरता । पूरण आरव-शशि = सारव कटुक पूर्णवन्द्य । वागिनि परि-  
वेये = निजुरी हां खेरल । चिकुर विरचि = केश के मुहि । अमिअ-  
लोभ = अमृतक लोभ । शशि-मण्डल = चन्द्रमण्डल पर । विपधर  
परचारे = सापि चलैत अछि । सुवजन-मानस = सुवकक मनरूपी चोरी  
हाटक = रत्न । कुचयुग = दुगु स्तनके । दिव = कसिकय । कञ्चुक-  
चोरी = चोलीक चोरी हां ।

(समकेओ क्षयनगृह मे प्रवेशक अभिय करैत छथि ।)

अतिरुद्ध—(देखि सहर्षं) की आवि गेलीह हमर प्रिया ? तँ आव हिनका देखि  
आसि जुड़बैत छी । (आनन्द श्री रोमाञ्च सहित देखैत छथि ।)

[तखन दुहू सखी अनिरुद्धके उवा समिति करैत छथि ।]

अनि० = (दुनु हाथ धरैत छथि ।)

रामा = (अतिरुद्धक प्रति) —

[गीत सं० = २८]

अवधारि = ज्ञान-कय । धनि = धन्या नायिका । रोप = लामस ।

पड़य हिनक जओ दोष रे, करिअ तकर नहि रोष रे ॥  
सहय लाख अपराध रे, सुजन करय नहि बाध रे ॥  
हर्षनाथकवि मान रे, मिथिलापति रस-जान रे ॥  
अनि०—परमनृगृहीतोऽस्मि (इति शिरस्यञ्जलि चटयति) ।  
(सखी निष्कामतः) ।

उवा—(सलज्जमधोमुखी तिष्ठति ।)

अनि०—(उपाया मुखमुन्नमय) —

गीत मुलतानी—२९

विरह दग्ध मोर तनु अनुमानी ।  
वचन-सुधारस मिचहू सेशानी ॥  
वसन दूर कह आनन चन्दा ।  
नयन—चकोर मोर कह सानन्दा ॥  
कर जोड़ि बिनति करिअ हम तोही ।  
एक बेरि नयन निहारिअ मोही ॥  
अधर अभिअ रस कह परगासे ।  
करिअ कृतार्थ अनुगत दासे ॥  
तुअ गुण बुझि अएलहुँ एहिठामे ।  
परसनि भय परिपूरिअ कामे ॥

सुजन = उत्तम ध्यति । बाध = बाधा ॥

अनि० = अत्यन्त अनुगृहीत छी । (कर जोड़ि माथ मे लगबैत छथि ।)  
[दुनु सखी चल गेलीहि ।]

अनि० = (उपाक मुँह उठाव) —

[गीत सं० = २९]

विरह-दग्ध = विभोक्त हां जरल । तनु = देह के । अनुमानी =  
विचारि । वचन-सुधारस = वचनरूपी अमृतक रस । सेशानी =  
चतुरनायिका । वसन = वस्त्र । नयन-चकोर = आँखिरूपी चकोर



रसमय हर्षनाथकवि भावे ।

नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

(इति शयने उपवेशयति ।)

(नेपथ्ये—इदो इदो पिअसही ।) [इत इतः प्रियसखी ।]

उवा—कथं पिअसहीओ आअच्छमि, ता अहमि गच्छेमि । [कथं प्रियसखी-  
वागच्छतः तदहमपि गच्छामि ।] (इत्युत्थाय प्रचलिता) ।

अनि०—कथं गतेषु प्रेयसी ? तदहमपि बहिर्भवतमाश्लिष्यमर्शये गच्छामि ।  
(इति निष्क्रान्तः) ।

(ततः प्रविशतश्चित्रलेखा-रामे)

रामा—कथं उपसादपाआ रअणी ? तथा हि—[कथं प्रभातप्राया रअनी ।  
तथाहि—]

गीत ललित-३०

सखि सखि ! ललित समय लख भोर ।

नागर-नागरि, रङ्गि रङ्ग करि शयन करय प्रियकोर ॥

पक्षी (जे चन्द्रमाके देखि प्रसन्न होइछ) । अघर-अभिअ रस =  
छोररूपी अमृतक रसके । अनुगत = शरणागत । परसनि = प्रसन्ना ॥

(ओछाओन पर बैसवेत छवि ।)

[नेपथ्य मे—'एम्हरहि बाटे' प्रियसखी ।]

उवा—को प्रियसखी लोअनि अबेत छवि ? त हमहूँ जाइत छी । (ऊठि बिदा  
भय गेलोहि ।)

अनि०—को चले गेलोहि प्रिया ? त हमहूँ बाहरक घर मे नित्यकृत्यक हेतु  
जाइत छी । (बहार भय गेलाह )

[तखन चित्रलेखा ओ रामा प्रवेश करैत छवि ।]

रामा—की भिनसरवा राति भय गेल ? जेना कि—

[गीत सं०—३०]

नागर-नागरि = नायक नायिका । रङ्गि = रङ्ग = रातुक केलि ॥

छीवर-अङ्ग, मयङ्ग तरणि बडि, शशिकर जाल पसार ।

बहुमत-मीन बभाए चलल अति, गगन पयोनिधि पार ॥

रवि कर कलित तिमिर-पट-मोचन, प्रकट अरुण-तनु भास ।

लाज मुख दिश, मुनल कुमुद दश, लखि कमलनि कर हास ॥

मलय पवन कम्पिततनु कमलनि, कोप अरुण करि अङ्ग ।

उपगत मधुकर, करय निरादर, कुमुदिनि-सङ्ग पिशङ्ग ॥

पति वञ्चित-रति, युवति विवर्त मति, करत सौति अभिधाप ।

पति-गञ्जन सहि, विविध वचन काहु-करत दोष अपलाप ॥

गुञ्जन मधुप, विहङ्गम कृञ्जत, शयन कुशल जनि भाप ।

हर्षनाथ कवि वचन सुधारत, विरल रसिक जन चाप ॥

इदानीं पिअसही सअणघरादो ण आअदा । (पुनर्निर्गम्य)

छीवर-अङ्ग = चन्द्रमाक कलङ्क (कालिमा) रूपी मलाह । मयङ्ग =  
तरणि = चन्द्रमाकपी वेङ्ग (ताओ) पर । शशिकर-जाल = चन्द्रमाक  
किरणरूपी जालके । बहुमत-मीन = तरेगनरूपी मछि । गगन-पयो-  
निधि = आकाशरूपी समुद्रक ॥ रवि = सूर्य । करकलित = हाथ  
(किरण) सौ पकड़ि कय । तिमिर-पट-मोचन = अन्धकाररूपी धस्त्रके  
हटयवाक हेतु । अरुण-तनु भास = लाल देह (अनुरक्त) धोभित छवि ।  
लाज दिश = पूर्वादिश (नायिका) कुमुदिनीक फूलरूपी आँखि मुनि  
लेलक ॥ मलय पवन = दहिनाही हवा सौ कौपाओल देहवाली कम-  
लनी । कोप अरुण = कोप सौ लाल । उपगत मधुकर = आयल भौरा  
के (भोर मे उपस्थित नायकके) । कुमुदिनि सङ्ग-पिशङ्ग = कुमु-  
दिनीरूपी नायिकाक समागम सौ ललित भूरा रंगक (भौरा के) ॥  
पतिवञ्चित रति = पतिक द्वारा समागम सौ वञ्चित (छल कयल  
गेल) । पति गञ्जन सहि = नायक नायिकाक कम्पति सहि के । दोष  
अपलाप = नायक अपन दोषके नटेव छवि ॥ मधुप = भौरा । विह-  
ङ्गम = पक्षी । शयन = सतवाक, शयनगृहक ॥

एखन घरि प्रियसखी सअणघर सौ नहि अयलीहि अछि । (फेर



कथं आवाजजेष ? [इदानीमपि प्रियसखी शयनगृहागता । कथं  
मागतैव ?]

उषा—(क्षणक्षणानुपुरं सख्यावालिङ्गति ।)

रामा—सहि ! कधेहि कधेहि, पड़म सम्मम वृत्तम् । [सखि कथम् प्रथमस-  
मागमवृत्तम् ।]

उषा—(गीतेन) —

ललित, गीत सं०-३१

भन दय मुनिअ वचन सखि आजि ।

सुपहु समागम कहितहुं लाजे ॥

रसमय पहु अञ्चल सहि लेला ।

लाज बदन मोर अवनत भेला ॥

जखन अधर रस कयलनि पाने ।

लाज चिकुर कुनि कथल पयाने ॥

कुचयुग परसि कएल हँसि कोरा ।

लाज लजाए पड़ाइलि मोरा ॥

सुमरि सुमरि सखि ! तसु स्वप्नहारे ।

गदगद स्वर पुलकित तनु भारे ॥

रसमय हर्षनाथकवि भाने ।

नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जाने ॥

देखि) की आजिये देखीहि ?

उषा—(पायल केँ अननमनवैत दुहु सखीकेँ आलिङ्गित करैत छथि ।)

रामा—सखी ! कहू कहू, प्रथम-समागमक वृत्तम् ।

उषा—(गीतक द्वारा) — [गीत सं० - ३१]

अवनत = झुकल । लाज चिकुर = लाज ही केश मुनि । पयाने =  
विदा भेल । कुचयुग परसि = दुनु स्तनक स्पर्श कय । कोरा = अकु-  
मे । लाज लजाए = लज्जा स्वयं लज्जित भय । पुलकित तनु = जान-  
न्धित शरीर ॥

रामा—सहि बाणपुत्रि ! तुझ तावदस घरे कलअलो सुणीअदि, ता बअंवि  
गच्छहा [सखि बाणपुत्रि ! तब तातस्य गृहे कलकलः श्रूयते । तदवमपि  
तब गच्छामः ।]

(इति निष्क्रान्ताः) ।

॥ इति अनिरुद्धसमागमो नाम तृतीयोऽङ्कः ॥

★

## अथ चतुर्थोऽङ्कः

(ततः प्रविशति बाणासुरः)

बाणासुरः—कः कोऽयं भो !

द्वारी—(प्रविश्य) जयहु जयहु देवी । एसोऽह्नि, आजनेहु देवी । [जयहु  
जयहु देवः । एसोऽह्नि, आज्ञापयतु देवः ।]

बाणः—कथम् मदन्तःपुरवृत्तम् ।

द्वारी—(गीतेन कथयति)

रामा—सखी बाणपुत्री ! अहाँक पिताक घर मे हुस्का सुनि पड़ैछ त हमरहु-  
छोकनि बली ।

[सब बहार भेलि]

॥ अनिरुद्ध-समागम नामक तेसर अंक समाप्त ॥

चारिम अङ्क

[बाणासुर प्रवेश करैत छथि ।]

बाण—बयो अछि ?

द्वारी—(प्रवेश कय) जय हो, जय हो देवक । इयेहु छी, आज्ञा देव देव ।

बाण—कहू हमर योड़ीक (अन्धरक) समाचार ।

द्वारी—(गीतक द्वारा कहैछ) —



नट रागे, गीत सं०--३२

कि करव नीच-कथा परमास,

कहि न सकिय किछु, ह्योअ तरास ॥

नागर एक मनोभव-वेश,

कयल कुमरि-मन्दिर परवेश ॥

भेलिह तनिक वस राजकुमारि,

एतवा बखलहुं नयन-निहारि ॥

किहरिअ मत मुनि एकर विचार

राजकुमरि भेलि कुलक अज्ञाद ॥

हर्षनाथ कवि मन दय गाव,

नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझु भाव ॥

वाणः - हा हतोऽस्मि !! महनि कुले कलझु जातः । (सर्वकलध्वम्) --

लक्ष्मा सुखकुले भवितुमुन्निहिता सेवा मुखानीपते

निजिज्यामरदैत्यदानवकुलं लब्धः प्रतापोऽधिकः ।

भ्रातृत्वं सरजम्भनोऽप्यधिगतस्तस्यापि मे मानुषात्

सज्जातं कुलधर्मगङ्गुधमहो चिन्ता गतिः कर्मणाम् ॥१२॥

[गीत सं० - ३२]

तरास = डर । नागर = चतुर युवक । मनोभव-वेश = कामदेवक  
रूपमे (अतिसुन्दर) । कुमरि-मन्दिर = कुमारी उपासक घर मे ॥

वाण—हाय मुझहुं !! महान् कुलमे कलझू लागल । (विकलता पूर्वक):—

सुख कुल मे जन्म पावि पार्ष्णीपतिक (महादेवक) सेवा कएल,  
सकल देवता दैत्य ओ राक्षस के जीति पंच प्रताप पाओल । काशिन  
केयक भाए होएबाक गौरव सेहो प्राप्त कएल । एहन यक्ष पओनि-  
हारी हमरा मनुष्य से कुलक गञ्जन भेल ! हाय!! कर्मक गति विधिये  
छेक ॥१२॥

अभि स--

ललित रागे, गीत सं०--३३

कजोन दुरित फल बिह भेल शंके,

एहन पवित्र कुल भेल कलके ॥

कि करव आव कुलक अभिमाने,

से जनमलि जे कटलक काने ॥

सुर नर मुनिगण परिजन साथे,

कोन परि डार करव हम साथे ॥

मन कर गरल करिअ हम पाने,

अगिनि गमन करि तेजिय पराने ॥

हर्षनाथ कवि मन दय गावे,

नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझु भावे ॥

(पुनस्सकोधं करान् करेः प्रपीड्य) —

वसन्त रागे, गीत सं०--३४

सहस्रभुज मोर करि अनादर, कयल कुल अपमान ओ ।

जेहन जे जन परम दुर्जन, हरव तनिक परान ओ ॥

दैत्य दानव यक्ष राक्षस, देवगण लय साथ ओ ।

तनिक होयि सहाम अओ पुनु, सभक कटाव माथ ओ ॥

आओरो,

[गीत सं०--३३]

दुरित = पाप । बिह भेल शंके = विधाता विपरीत भेलाह । गरल = विष ॥

(फेर कोधपूर्वक हाथके हाथसे दाबि) —

[गीत सं०--३४]

सहस्रभुज मोर = हजार भुजावाला जे हम तकरा । दैत्य = राक्षस  
जे दितिक सन्तान अछि । दानव = राक्षस जे दनुक सन्तान अछि ।  
यक्ष = देवयोगिविशेष । राक्षस = देवयोगिविशेष जे निकषाक सन्तान



हपर भुजङ्गर असुरसुरनर, सभक्त कम्पित गात ओ ।  
के एहन जग माह, जे जन करधि नहि प्रनिपात ओ ॥  
करब आज अन्हार बहदिस, विशिख लग रण जाए ओ ।  
हर्षनाथ विचारि भन गिरिजा चरण द्विज जाए ओ ॥

(पुनः सकोधं) पुनू रे द्वारिन् ! सखरमयाहि किकारसैन्य-  
समुद्योगाद ।

द्वारी—नथा । [ तथा । ] (इति निष्कास्तः ।)

(नेपथ्ये—भो भोः किङ्करादिगणाः ! सौधं वेष्टयित्वा सज्जोभवन्तु  
भवन्तः ।)

(पुनर्नेपथ्ये—वेष्टितमरुमाभिरुद्धसैन्यसङ्घः पूरम् ।)

बाणः—कथमागतं किङ्करसैन्यम् ?

(पुनर्नेपथ्ये—प्रहरन्तु प्रहरन्तु भवन्तः । एवं रत्तिगस्करः परिध  
अगमयन्तिष्ठति ।)

बाणः—कथमुपकारतमेन युद्धम् ? तदहमपि तस्य देवहन्तस्य पराक्रमं गत्वा

अष्टि । असुर=दैत्य । गात=शरीर । जगमाह=संसारमध्य ।  
प्रनिपात=पाए पर माँघ झुकबीत छधि । बहदिस=दणो दिशा ।  
विशिख=बाण । रण=युद्धक्षेत्र ।

(फेर कीधक) सुन रे द्वारपाल ! भटव जो, सेवक ओ सेनाक उद्यो-  
गक हेतु ।

द्वारी—वेस । (बहार भय गेल ।)

[ नेपथ्य मे—'हे हे सेवकलोकनि ! कीठके घेरि जहाँलोकनि तँवार  
रह' । ]

[ फेर नेपथ्य मे—'हमरासव ड्योड़ीके घेरलहु' । ]

बाण—की सेवक-सैन्य आवि गेल ?

[ फेर नेपथ्य मे—'मारु मारु अहाँमभ । ई चमचोर लोहाक डण्टा  
धुमाय रहल अष्टि' । ]

बाण—की युद्ध बभिए गेल ? त हमहूँ ओहि अमगलाक पराक्रम जाय देखि-

पश्यामि । (इति निष्कास्तः) ।

(ततः प्रविशति परिधवाणिरनिरुद्धः)

अनि०—एवाऽहमसुरकुलं नाशयामि । अद्यास्मद्विक्रमं पश्यन्तु लोकाः ।

(नेपथ्ये—हा हवति !! अजन्तस्य का अवस्था हविस्सदि । [ हा  
हताऽस्मि ! अद्य अर्धपुत्रस्य का अवस्था भविष्यति ? ]

अनि०—कथमियमस्मत्प्रेयसी बाणसंघामसमुद्योगनाकर्ष्य भवतिह्ला किमपि  
विरुधन्ती इत एवाभिवर्त्तते । तथाध्वेनो समाश्वासयामीति ।  
[ साम्प्रतीक्षमाणमितिष्ठति । ]

(ततः प्रविशतिपुषा । पुनर्हा हवति) [ हाहताऽस्मि । [ इत्यादि पठति ]

अनि०—प्रिये न भवेत्तथम् ।

(बोहा)

बाण सहित जत असुरगण, सभक्त करब हम नाश ।  
अधिर मिलब हम तोहि पुनू, सुन्दरि तेजत तरास ॥

येक । (बहार भय गेलाह ।)

[ तदन हाथमे लोहाक डण्टा लेने अनिरुद्ध प्रवेश करैत छधि । ]

अनि०—इयेह हम दैत्यवंश के नष्ट करैत छी । आइ हमर पराक्रम देखओ  
लोकसभ ।

[ नेपथ्य मे—'हाय मुदलहु' !! आर्यपुत्र की अवस्था होयति । ]

अनि०—की ई हमर प्रेयसी उपा बाणासुरक युद्धकरबाक उद्योग सुनि डरे  
विकल भेलि बिछु विलाप करैत एम्हरहि अबैत छधि ? त कनेक  
हितका आत्मासन दैत छी । (हुनक प्रतीक्षा करैत ठाढ़ रहैत छधि ।)

[ तदन उपा प्रवेश करैत छधि । फेर 'हा हतास्मि' इत्यादि बजैत  
छधि । ]

अनि०—अरे ! डर जनु करो । (उपा के आश्वासन वय कीध युद्धक हेतु बहार  
भय गेलाह ।)



(इत्युषी समावर्तय सचरं युद्धाय निष्क्रान्तः)

उपा - कथं गतो अज्जउत्तो, तां अहं पि देखीं पमादेहुं गच्छेमि [कथं गत आर्यपुत्रः? तदहमपि देखीं प्रसादयितुं गच्छामि ।] (इति निष्क्रान्तः)

[अथ विष्कम्भकः]

(ततः प्रविशति चित्रलेखा)

चित्रलेखा - अथं रणवृत्तं विजाणिदुं पेसिदो चारो विराअदि । [कथं रणवृत्तं विजाणुं प्रे पितृश्चारश्चिरायते ।] (पुनस्सर्व्वतोऽवलोक्य) अअं आजदो उजेव । [अयमागत एव ।]

(ततः प्रविशति चारः)

चारः - इयं चित्रलेखा । सद्यावदुपसंणीमि (इत्युपसंणीति) ।

चित्र० - कथं हि कथं हि, रणवृत्तम् । [विषय-कथय रणवृत्तम् ।]

चारः - शृणु सर्व्वम् -

गीत लाउनि-३५

रथ खड्गि बाण-महाभूर आयल, लय चतुरङ्ग बल धीरे ।

कर गहि परिष अमुरकुल मारल, अनिरुध याधव वीरे ॥१॥

उपा—की चल गेलाहु आर्यपुत्र ? त हुमहुं देखीके प्रसन्न करवाक लेल जाइत छी । (बहार-अथ गेलि ।) ॥

[विष्कम्भक]

[तखन चित्रलेखा प्रवेश करैत छथि ।]

चित्र० - युद्धक समाचार बुझवाक हेतु पठाओल दूत किएक देखी करैत अछि ? (फेर चारुभर देखि) इयेहु त आविण् गेल ।

[चार प्रवेश करैत ।]

चार—ई चित्रलेखा धिकीहु । त आव समीप जाइत छी । (समीप जाइत छथि ।)

चित्र०—कहहु कहहु, युद्धक समाचार ।

चार—सुन सबटा ।

[ गीत सं०—३५ ]

१ चतुरङ्गबल—हाथी घोड़ा रथ ओ पण्डल एहि चारु अङ्ग ही युद्ध

चित्र० - (सहर्षं) उज्जोविदहि । तदो तदो । [उज्जोविताऽस्मि । ततस्ततः ।] चारः—

काम-तनय डर सकल पड़ावल, जत छल रिपुदल वीरे ।

चित्र० - (सहर्षं) इअं पारिदोसिअं नेव्हु [इअं पारितोषिकं गृह्णाण] (इत्यङ्गु-रीयकश्रवणात्) । तदो तदो [ततस्ततः] ।

चारः -

नयन निरखि कहूँ कुपित भेल पुनु, बाण-नृपति रण-धीरे ॥२॥

चित्र० - हा संगइदहि । तदो तदो [हा संगमिताऽस्मि । ततस्ततः] ।

चारः -

जयभरि जनिक समान आन नहि, रिपुकुल कम्पित जाही ।

नागपाश लय बुद्धकय बंधलक, कयल अपन यश ताही ॥३॥

चित्र० - (समीपलक्ष्यं) हा हदहि । तदो तदो । [हा हताऽस्मि । ततस्ततः] ।

चारः—

कामतनुज तन कम्पन उज्जत, तेज न निय अभिमानी ।

नृप-लक्ष्मीश्वरसिंह शुभधि रत, हर्षनाथ कवि माने ॥४॥

चित्र०—तदो तदो । [ततस्ततः] ।

सेना । धीरे—धैर्यवान् । परिष—लोहदण्ड ॥

चित्र०—(सहर्षं) प्राण धुरि आयल । तखन ?

चार - कामपुत्र अनिरुधक डरै सभ शत्रुपक्षक वीर भागि गेल ।

चित्र०—(सहर्षं) ई इनाम लएहु । (ओंटी बँत छथि ।) तकर बाद ?

चार—अपना आँखि हाँ ई देखि पराक्रमी राजा बाण कुपित भेलाहु ॥२॥

चित्र०—हाय ! संदेह मे पड़लहुँ । तखन ?

चार—रिपुकुल=शत्रुगण । कम्पित जाही=जनिका से डराइत अछि ।

नागपाश=सर्व्ववन्धनी । बुद्धकय=कसिकय ॥३॥

चित्र०—(विकलतापूर्वक) हाय मुदलहुँ ! तखन ?

चार - काम-तनुज=कामक पुत्र (अनिरुध) के । तन=देह मे ; निय अभि-माने=अपन गर्व ॥४॥

चित्र० - तकर बाद ?



चारः - तत्रैवानिच्छेत् हनुमुपयुक्तं वाणासुरं जामाताऽयं न हस्तस्य इति कुम्भा-  
ण्डो निवर्त्यमानसः ।

चित्र० - सुदृष्टुं हिदं मन्तिराणम् । ता रणवृत्तिं विजसहीए शिवेदिकुं गमिस्सं ।  
तुम पि पुणो तद्वृत्तिं विजाणिकुं तस्य अहिसर । सुदृष्टुं कृतं मन्तिरा-  
जेन । तद्वृत्तिं विजसहीए निवेदपितुं गच्छामि । त्वमपि पुनस्तद्वृत्तिं  
विजाणुं तयाऽहिसर ॥

चारः - तथा ।

(इति निष्काम्नी)

(इति विश्वकर्माभकः ।)

(ततः प्रविशति नागपाशवत्सोऽनिरुद्धः)

अनि० - (सर्पबन्धनबाधाभ्यान्नाटयन् स्वगतं) किमिदानीमनुष्ठेयं, कथं वचनमेषो  
भविष्यति ? (विमृश्य) भगवत्या दुर्गायाः प्रसादमात्रेण को वा प्रती-

चार - तस्मिन् अनिरुद्धके मारवाक हेतुं तंवार वाणासुरके मन्त्री कुम्भाण्ड  
रोकलक्षिणं जे 'ई जमाय विवाह' हिनका मारव उचित नहि ।

चित्र० - बड़दीव कयलनि मन्तिराज । त युद्धक समाचार प्रियसखी के निवे-  
दित करवाक लेल जाइत छी । तोहू फेर ओहि समाचारके युग-  
बाक लेल ओतय जाह ।

चार - वेग ।

[हुतू गोटा बहार भेल ।]

[विश्वकर्माभक समाप्त]

[आब नाग-कानी मे जकड़ल अनिरुद्ध प्रवेश करैत छथि ।]

अनि० - (माँप सँ बान्हल रहवाक कष्ट प्रदर्शित करैत मनहि मन) एखन की  
करी, कोना बन्धन सँ छुटकारा होयत ? (विचारि) भगवती दुर्गाक

१ - भूत वा भविष्य कथांशक मध्यम-पात्र द्वारा वर्णन अंक मध्य वा अन्त  
मे जे जोड़ल रहैल से विश्वकर्माभक कहबैछ ।

कारो भविष्यति ? तद्यावत्सामुपश्लोकयामि । (साञ्जलिबन्धं प्रका-  
शम्) -

गीत सौरठ--३६

जय जय महिषविनाशनि भगवति, सिंहगमनि जगदम्बे ।  
त्रिभूवन्तारिणि, विषदनिवारिणि, सकल भुवन अवलम्बे ॥  
त्रिदश तपोधन, दनुज मनुज गण विकुर निकर अभिरामे ।  
तुअ पद चिन्तन, विमुख सतत मन, किदहु होएत परिणामे ॥  
हमर दुरित मति, जानि सकल गति, करिअ न अतिशय रोषे ।  
तनय रहित मनि, करय अनलगति, कहिअ ककर धिक होषे ॥  
तुअ गुण निगम अगम हरिहर-विधि कहि न सकथि अनुपामे ।  
अनेक जनम तप करथि जनन दय, तुअ पद दखन कामे ॥  
क्षमिय हमर अपराध कृपामयि, करिअ अन्नय घर दाने ।  
गिरितन्दिनि पदपङ्कज मधुकर, हर्षनाथ कवि माने ॥

(इति ताभ्यापति ।)

कृपाक बिना कोन प्रतीकार होयत ? त तावत् हुनकहि गोहरबैत छी ।  
(कल जोरि सुनाय) -

[गीत सं०-३७]

महिष-विनाशनि = महिषासुरक नाश कयनिहारि । सिंहगमनि =  
सिंह पर चलनिहारि ॥ त्रिदश तपोधन = देवता, ऋषि, दैत्य ओ  
मनुष्यसभक माथक केशक समूह मिड़ला सँ सुन्दर जे अहाँक चरण  
तकर ध्यान सँ विमुख जै मन रह्य तँ । किदहुँ = किछुओ (विपरीते) ।  
परिणामे = फल । दुरित-मति = पापबुद्धि । रोषे = तामस । तनय =  
पुत्र । रहित मति = बुद्धिहीन । अनलगति = अगर्ल, अनुचित ॥  
निगम-अगम = वेद ओ तन्त्रशास्त्र मे । हरि हर-विधि = विष्णु महा-  
देव ओ ब्रह्मा, अनुपामे = जकर उपमा नहि हो ॥

(हुनक ध्यान करैत छथि ।)



(ततः प्रविशति भक्तिपरतन्त्रा दुर्गा)

दुर्गा - प्रसन्नाऽस्मि । तत्राभीष्टमभ्यर्थय ।

अनि० - नागवन्धनान्मुक्तिर्भवतु ।

दुर्गा - एवमस्तु । तथापि कृष्णागमनपर्यन्तमवच्छेदनाऽपि त्वया शङ्कवद्भूत-  
व्यम् । (इति निष्क्रान्ता ।)

अनि० - कथञ्च त्वं जगदम्बा ? (विस्मय सहर्षं) विण्टटमम सत्त्वबन्धनदुःखं  
भगवन्वाः प्रसादात् । तद्विदानीमप्यऽपि तत्स्मरणकमलस्थायिता  
कृष्णागमनप्रतीक्षमाणेन कुञ्चिद्वर्तितव्यम् (इति निष्क्रान्ताः) ।

इति अनिरुद्धबन्धनमोक्षणो नाम चतुर्थोऽङ्कः ॥

### अथ पञ्चमोऽङ्कः

(ततः प्रविशति विष्ठाकुलः कृष्णः)

कृष्णः - कथमनिरुद्धाश्वेषणाय प्रेषितश्चारदिचरायते ? (पुनस्तस्मात्तो विष्ठाकुलः)  
अयमागत एव ।

[तस्मिन् भक्तिं सौ पराधीन दुर्गा प्रवेशं करोति छयि ।]

दुर्गा - प्रसन्न छी, तौ अभीष्ट वरदान माङ् ।

अनि० - नागवन्धन सौ छुटकारा होखय ।

दुर्गा - एहिना हो । तयो कृष्णक अयवाधरि विनु बन्धलो अहाँ बाहल जकाँ  
रही । (बहार भय गेलीहि ।)

अनि० - की जगदम्बा दुर्गा चले गेलीहि ? (विचारि सहर्षं) भगवतीक कृपासँ  
हमर सत्त्वबन्धनक दुःख नष्ट भेल । तँ एखन हमहूँ हुनक स्मरणकमलक  
ध्यान करैत कृष्णक आगमनक प्रतीक्षा करैत कतहु रहौ ।

[बहार भय गेलाह ।]

॥ अनिरुद्धक बन्धन सौ छुटकारा नामक चारिम अङ्क समाप्त ॥

पाँचम अङ्क

[आब चिन्ता सौ व्याकुल कृष्ण प्रवेशं करोति छयि ।]

कृष्ण - अनिरुद्धकेँ एककाक हेतु प्रेषित दूत कियेक देशी करैत अछि । (फेर  
चारुभर देखि) इयेह तँ आविये गेल ।

(ततः प्रविशति चारः)

चारः - जयति जयति देवः ।

कृष्णः - कथय कुवापि मिलितोऽनिरुद्धः ?

चारः -

गीत लावनी--३७

जल बल कानन, जत हम जातल, जोहल कय परवेशे  
तेजि सकल भयः परम पसन दम, कतहु न पाओल उदेशे ॥  
पारिजात तह हरि लय आनल पै सुरपति कहँ रोपे ।  
तेँ अनि कामसनय हरि लय गेल, ई होअ तहाँ विवेचे ॥  
(अथवा)

हिनक निरखि तनु, करव दोसर पुन, सुन्दर तनु निरमाने ।  
ई जनि मन करि, लय गेल विह हरि ई हीन मन अनुमाने ॥  
जे विछ बुझि भेल, से हम कहि बैल, अपनहि कह अनुमाने ।  
नृप लहमोस्वरविह बुझि रस, हर्षनाथ कवि भाने ॥

कृष्णः—मैंने वादीः । न देखता भूद्रमतयो भवन्ति । तत्पुनरेव एवाऽनिरुद्ध-  
गन्धेय ।

[तस्मिन् चार प्रवेशं करोति अछि]

चारः—कृष्णदेवक जय हो, जय हो ।

कृष्ण - कहँ कतहु भेटलपुन अनिरुद्ध ?

चार -

गीत सौ - ३७

बल = पुरुषी पर । कानन = वन मे । सकल भय = सब कथक डर ।  
यनन = यन । उदेशे = पना । पारिजात = पारिजातक गछ केँ हटक  
वन सौ कृष्ण अनने छलाह । सुरपति कहँ = इन्द्र केँ । कामसनय =  
कामदेवक पुत्र अनिरुद्ध केँ । हरि = हरण कय । तनु = देह । विह  
हरि = विधाता हरण कय केँ । अनुमाने = बार बार चिन्तन ॥

कृष्ण - एना जनु बाजह । देवता भूद्रबुद्धि नहि होइत छयि । तेँ फेर जाय  
अनिरुद्धक अश्वेषण करहु ।



चारः—यथाज्ञापयति देवः । (इति निष्क्रान्तः ।)

कृष्णः—(सद्योबलव्यं) यस्मिन्नाश्वेपितोऽप्यनिरुद्धो न मिलति । अन्तःपुरे च तद्वि-  
लेपप्रभवः कोलाहलो न निवर्त्तते । तरिकमत्र विधेयम् ? (विमुग्धा-  
काशे स्मरन्) नारदद्वारा सर्वसम्भवगतव्यं, स च सर्वव्याप्तुसरन्  
सर्वं जानाति (इति नारदं स्मरति) ।

(ततः प्रविशन् आकाशमार्गेण नारदः)

गीत दादरा—३८

गमन-गमन मुनि लेल परवेश ।

भाल तिलक शोभ घबलित केश ॥

हाथ कमण्डलु दण्ड विराज ।

आवधि नारद हरिक समाज ॥

चोदह भवन फिरि सव ठाम ।

अन्वत कलह देखत मन काम ॥

झिन्त मूल बलह करवि ज तुल ।

कउय चरवि से लखि कहै मूल ॥

चारः—देव जे आज्ञा देखि । (बहुर भय गेल ।)

कृष्ण—(विकलतापूर्वक) यत्न पूर्वक अन्वेपण कयलो पर अनिरुद्ध नहि भेटैत  
छथि, ओ ब्योढी मे हुनक दुख सँ भेल अशान्ति नहि हटैत छथि । त  
एतय की करी ? (विचारि आकाश दिस स्मरण करैत) नारदक द्वारा  
सब किछ बुझि सकैत छी । ओ तँ सब ठाम जाइत छथि ओ सब टा  
जनेत छथि । (नारदक स्मरण करैत छथि ।)

[तत्काल आकाश बाटें नारद प्रवेश करैत छथि ।]

[गीत सं०—३८]

गमन-गमन—आकाशगामी । भाल तिलक = रुपार पर टीका । घब-  
लित केश = उज्जर केश । अनुस्वन = सतत । कलह = संगड़ा । झिन्त-

हर्षनाथ कवि मन दय गाव ।

नृप लक्ष्मीश्वरतिह बुझु भाव ॥

कृष्णः—(प्रणमति) ।

नारदः—(सुभाषितान्तरवा) कथय कथय केन हेतुना स्मृतोऽस्मि ?

कृष्णः—केनापि हृत्तोऽनिरुद्धो न मिलति । तत्कथय, त्रिभुवनमदता भवता  
कुत्रापि दृष्टः ?

नारदः—बाणपुत्री-विचिकीर्षया शोणितपुरं चित्रलेखया नीतः । तत्र च  
बाणासुरेण सह सङ्गं कृत्वा नामपाशेन बद्धस्तिष्ठति ।

कृष्णः—(गसम्भ्रमं) कथंस्तत्र गतव्यम् ?

नारदः—वल्लभदप्रश्नं मनाभ्यां सह गरुडमारुह्य सत्वरञ्जन्तव्यम् । अहमप्याका-  
शमार्गेण गत्वा सङ्गरमालोकयन् चिरेण चक्षुषी शीतलविष्यामि ।

कृष्णः—तथेति (गरुडं स्मरति) ।

(ततः प्रविशति पक्षवातकम्पितालिलचराचरो गरुडः)

मूल = बिना कारणक । तुल = सरिय य । लखि कहै मूल = कारण देखि  
कहै ।

कृष्ण—(प्रणाम करैत छथि ।)

नारद—(सुभाषण दय) कहू-कहू, कोन हेतुसँ हमर स्मरण कयल अछि ?

कृष्ण—ककरहु द्वारा हरण कयल गेल अनिरुद्ध नहि भेटैत छथि । से कहू,  
त्रिभुवन मे घुमैत अहाँ हुनका कतहु देखलियनि अछि ?

नारद—बाणासुरक पुत्री छपाक यि करवाक इच्छा सँ चित्रलेखा हुनका  
शोणितपुर लय गेलि । ओतय बाणासुरक संग युद्ध कय नामपाश सँ  
बान्हल छथि ।

कृष्ण—(हड़बड़ावत) आतय कोना जायब ?

नारद—वल्लभ ओ प्रश्न मनक संग गरुड पर चढ़ि सीध जायब उचित । हमहँ  
आकाशमार्गे सँ जध्य युद्ध देखैत बहुत दिन पर आँखि जुड़ायब ।

कृष्ण—बेस । (गरुडक स्मरण करैत छथि ।)

[तत्काल पार्श्विक हवा सँ भ्रम चर-अन्तर केँ कम्पित करैत गरुड प्रवेश  
करैत छथि ।]



गरुडः—जयति जयति देव । किमर्थं स्मृतोऽस्मि ।

कृष्णः—(सादर) अन्तरनिहृदमोक्षणाय शोणितपुरं गन्तव्यम् ।

गरुडः—सखा (इष्टवृत्तकथायादयति) ।

कृष्णः—कश्चिद्वरेणऽऽहूतो बलभद्रप्रशुम्नो नामतो ? (पुनर्निहृद्य) एतावा-  
गतावेव ।

(ततः प्रविशति बलभद्रः प्रशुम्नश्च)

कृष्णः—(दृष्ट्वा ससंभ्रमं बलभद्रप्रशुम्नौ प्रति) अनिहृदमोक्षणाय सखैर-  
स्माभिः शोणितपुरं गन्तव्यम् ।

बलभद्रप्रशुम्नौ—एवमस्मृ ।

(इति निष्क्रान्ताः) ।

(ततः प्रविशति बाणासुरः)

बाणः—कश्चिद्वरेणाहूतो ज्वरो नेदानीमप्यगतः ? (पुनर्निहृद्य) अयमागत  
एव ।

गरुडः—देवक जय हो, जय हो । किमेक स्मरण कमल अछि ?

कृष्ण—(सादर) भाइ ! अनिहृद के छोड़्यवाक लेल शोणितपुर जयवाक  
अछि ।

गरुड—बेस । (उत्कण्ठक आभिनय करैत छथि ।)

कृष्ण—बड़ीकाल बजाओल बलभद्र ओ प्रशुम्न किमेक नहि अयलाह अछि ?  
(फेर देखि) दयेह दुहु गोटा आविये गेलाह ।

[तथन बलभद्र ओ प्रशुम्न प्रवेश करैत छथि ।]

कृष्ण - (देखि हरबड़ाव बलभद्र ओ प्रशुम्नक प्रति) अनिहृदके छोड़्यवाक  
हेतु हमराओतनि सभकेओ शोणितपुर आयब ।

बलभद्र + प्रशुम्न - एहिना हो ।

[तभ बाहुर भय गेलाह ।]

[तथन बाणासुर प्रवेश करैत छथि ।]

बाण - बड़ीकाल बजाओल ज्वर एसनो धरि नहि किमेक आयल ? (फेर  
देखि) दयेह आविये गेल ।

(ततः प्रविशति ज्वरः)

गीत मालव--३६

अति उममत्त भयङ्कर वेश,

रोगराज ज्वर देल परवेश ॥

सीनि चरण, तिनि मुख विकराल

नव लोचन, छओ बाहु विशाल ॥

नयन निमीलित आलस पाए,

हाथ भसम, अनुछन हफिआए ॥

जोदिस झुकि झुकि कय पजान,

जाहि परमय ताहि हरए परान ॥

ज्वरः - जयति जयति देवः । कसय, किमर्थमाहूतोऽस्मि ?

बाणः—बलभद्रप्रशुम्नाभ्यो सह यदुपवीरः कृष्णोऽस्माभिर्पार्श्वं समागतः ।

तदद्य भवता सर्वतःसेनाव्यूहं विधाय रणभूमौ सावधानेन भवितव्यम् ।

ज्वरः—यथाऽज्ञापयति देवः । (इति निष्क्रान्तः) ।

बाणः - (सर्वतो विलोक्य) कथं गत एव रोगराजः । तदस्माभिरपि रथमा-  
स्थाय रणभूमौ गन्तव्यम् । (इति निष्क्रान्तः) ।

[तथन ज्वर प्रवेश करैछ ।]

[गीत सं०—३९]

उममत्त = नशा मे चूर । नव लोचन = नओटा अँखि । नयन-निमीलित

= अँखि भुनने । भसम = छाउर । अनुछन = हरदम । पजान = यात्रा ।

परमय = छुवय ॥

ज्वर—देवक जय हो, जय हो ।

बाणः—बलभद्र ओ प्रशुम्नक संग यादव-वीर कृष्ण हमरासभक संग छड़वाक  
हेतु अयलाह अछि । ते आइ अहाँ सभदिस सँ सेनाक व्यूह (विन्यास)  
बनाय युद्धक्षेत्र मे सावधानी सँ रहब ।

ज्वर—देवक जे आज्ञा । (बहुर भय गेल ।)

बाणः—(बाहुर देखि) की चले गेलाह रोगराज ? तेँ हमरोसभ रथपर चढ़ि  
रणभूमि जाइ । (बहुर भय गेलाह ।)



(ततः प्रविशति चित्रलेखा)

चित्र० - बाणनिग्रहनिमित्तं सिरीकण्हो आओ, ता इमं वृत्तं सहीए पिअअणे निवेदिदुं गच्छेमि [बाणनिग्रहनिमित्तं श्रीकृष्ण आगतस्तद्विदं वृत्तं सख्याः प्रियजनै निवेदितुं गच्छामि । (इति गमनमभिनयति) ।

(ततः प्रविशति अनिरुद्धः)

अनि० - कथमिदं चित्रलेखा ? चित्रलेखे ! कथय शोणितपुरवृत्तान्तम् ।

चित्र० - सिरीकण्हो आओ दोसदि [श्रीकृष्ण आगतो दृश्यते] ।

अनि० - तहि निगृहीत एव बाणः ।

चित्र० - सख्यं सम्भावीअदि । [सख्यं सम्भाव्यते] ।

(नेपथ्ये गीयते)

गीत शंसौटी सं०---४०

गरुड़ चढ़ि बलदेव सँग लय, कामदेवक साथ ओ ।

चक्र कर गहि घाए पहुँचल, शोणितपुर यदुनाथ ओ ॥

[तखन चित्रलेखा प्रवेश करैत छथि ।]

चित्र०—बाणकेँ दमन करबाक हेतु श्रीकृष्ण अयलाह अछि, से ई समाचार सखीक प्रियलोक केँ सुनयबाक लेल जाइत छी । (जयवाक अभिनय करैत छथि ।)

[तखन अनिरुद्ध प्रवेश करैत छथि ।]

अनि०—की ई चित्रलेखा धिकीह ? चित्रलेखा ! कहू, शोणितपुरक समाचार ।

चित्र० - श्रीकृष्णकेँ आयल देखैत छियनि ।

अनि०—तखन तँ बाणक दमन भइये गेल ।

चित्र०—सब सम्भव अछि ।

[नेपथ्य मे गाओल जाइत अछि :—]

गीत सं०—४०

कर गहि—हाथमे छय । घाए—दीड़ि । यदुनाथ—कृष्ण । सङ्गर—

भेल सङ्गर अति भयङ्कर, बाण किङ्कर—सङ्ग ओ ।

हनल रिपुदल समर अतिबल कयल ज्वर तनुभङ्ग ओ ॥

रोगराज - बिलाप मुनि हरि, कयल तनु जिवदान ओ ।

कहल बहुविधभाग तनु करि, फिरह सकल जहान ओ ॥

कुपित रथ चढ़ि बाण पहुँचल, घोर सङ्गर भेल ओ ।

कृष्ण बाणक बाहु काटल छाड़ि दुइ भृज देल ओ ॥

बाण हरपित भेल पुनु, त्रिपुरारि सँ बर पाए ओ ।

हर्षनाथ विचारि भन, गिरिजाचरण मन लाए ओ ॥

अनि०—(सहर्ष स्वगतं) पुनमयमस्मयितामहविजयो बभ्रिजनं गमिषे । (प्रकाशं) चित्रलेखे ! श्रुतम्भवत्या ?

चित्र०—भह सुदं । [भद्रं श्रुतम् ।]

(मुत्तरेपथ्ये "इत इतो भवन्तः" ।)

चित्र०—कथं नारद - पिहिठ - मग्गो बलहद-पञ्जुम्मेहि सह सिरीकण्हो द्वो प्रजेव अहिवट्ठदि, ता अहुरि तस्स दंसणेण अज्ज लोअणाइ' सीवलइ-सं । [कथं नारदहिष्ठमार्गः बलभद्रप्रद्युम्नाभ्यां सह श्रीकृष्ण इत एवाभिवर्त्तते, तदहमपि तस्य दर्शनेनाद्य लोचने शीतलयिष्यामि ॥]

युद्ध । किङ्कर-सङ्ग=सेवक सहित । हनल रिपुदल समर=युद्ध मे शत्रुक सेना केँ मारलनि । ज्वर तनुभङ्ग=ज्वर केँ अङ्गभङ्ग । रोग

राज-बिलाप=रोगक राजा ज्वरक कानन । हरि=कृष्ण । बहुविध

भाग तनु=देहक बहुतो भाग (खण्ड) कय । जहान=संसार । कुपित

=तमसायल । घोर संगर=प्रचण्ड युद्ध । त्रिपुरारि सँ=महादेव सँ ।

अनि०—(सहर्ष स्वगतं) निश्चित ई हमर पितामहक विजय भाँटसभक द्वारा

गाओल जाइछ । (मुनाय) चित्रलेखा ! सुनल अहाँ ?

चित्र०—नीकजकाँ सुनल ।

[फेर नेपथ्य से—"एम्हर वाटे" अपने लोकनि" ।]

चित्र०—की नारदक द्वारा रास्ता देखओला पर बलभद्र ओ प्रद्युम्नक संग श्रीकृष्ण एम्हरहि अओत छथि ? तँ हमहू हुनक दर्शन सँ आइ आँखि जुड़ायब ।



अनि०—एवमेवम् ।

(ततः प्रविशति बलभद्रप्रदं युष्माभ्यां सह गरुडारुक् श्रीकृष्णो नारदं  
दृष्ट्वा ।)

नारदः—एष नागपाशबद्धोऽनिरुद्धस्तिष्ठति । तदेतन्मोक्षयतु गरुडो नागपा-  
शात् ।

गरुडः—तथा । (इत्युत्सर्व्यति । नागाः पलायन्ते) ।

अनि०—एषोऽनिरुद्धोऽहं भवतः प्रणमामि ।

बलभद्रः—सर्व्वदा कल्याणमाप्नुहि ।

कृष्णः—कव पुनरस्माकं स्तुषा बाणपुत्री ? चित्रलेखे ! प्रवेशय ताम् ।

चित्र०—तथा । [तथा] । (इति निष्क्रम्य तया सह प्रविशति) ।

चित्र०—एसा अद्यापि पिअसही बाणपुत्री तुस्से पणमइ । [एवाऽस्माकं प्रिय-  
सखी बाणपुत्री युष्मान् प्रणमति ।]

बलभद्रः—सौभाग्यवादी भूयात् ।

अनि०—अवश्य, अवश्य ।

[तत्क्षण बलभद्र ओ प्रेक्षन् मनक संग गरुड पर चढ़ल श्रीकृष्ण ओ नारद  
प्रवेश करै छथि ।]

नारदः—इयेह नागपाश मे बान्हल अनिरुद्ध छथि । से हिनका नागपाश से गरुड  
छोड़ाबधू ।

गरुडः—वेस । (लग जाइत छथि, नाग सभ भगीत अछि ।)

अनि०—इयेह हम अनिरुद्ध अहाँलोकनिके प्रणाम करैत छी ।

बलभद्र—सभ दिन कल्याण प्राप्त करू ।

कृष्ण—आ हमरालोकनिक पुतोहु बाणपुत्री कतय छथि ? चित्रलेखा ! हुनका  
प्रवेश कराउ ।

चित्र०—वेस । (बहार भय हुनका संग प्रवेश करैत छथि ।)

चित्र०—ई हमरासभक सखी बाणपुत्री एषा अहाँसभ के प्रणाम करैत छथि ।

बलभद्र—सौभाग्यवती होयु ।

कृष्णः—देवर्षे नारद ! किमतः परं विधेयम् ?

नारदः—देव ! स्वजनसमाश्रयताय बाणपुष्पनिरुद्धाभ्यां सह सटिति द्वार-  
वती गन्तव्या ।

कृष्णः—एवमस्तु ।

(इति सर्व्वे गमनमभिनयन्ति)

नारदः—कथं कृतकार्थ्यैर्युष्माभिः क्षणमात्रेण द्वारवतीं प्राप्ता ।

कृष्णः—सर्व्वभिभवतः प्रसादात् ।

(ततः प्रविशति पुरस्त्रीभिस्सह रुक्मिणी)

रुक्मिणी—(सहर्षं कृष्णमपति) अज्ज सम्पणमनोरहा अहं बहुए बाणपुत्रीए  
दंसणेण । [अद्य सम्पूर्णमनोरथा अहं बह्वे बाणपुत्र्या दर्शनेन ।]

कृष्णः—एवमेव, तदनया सममनिरुद्धं नीराजयतु भवती ।

रुक्मिणी—तथा । [तथा] । (इति नीराजयति ।)

गीत चुमाओन आरती--४१

पुरव-जनम-तप समुचित, आज सुमङ्गल भेल ।  
लय नागरि यदु-बालक, हरषित दरगन देल ॥

कृष्ण—देवर्षि नारद ! आव की करक चाही ?

नारद—देव ! अपनालोकक आश्रयामनक लेल बाणपुत्री ओ अनिरुद्धक संग  
सटय द्वारका चली ।

कृष्ण—एहिना हो ।

[सभ जयवाक अभिनय करैत छथि ।]

नारद—की कार्यसम्पादन कय अहाँलोकनि छने भरि मे द्वारका पहुँचि गेलहुँ ?

कृष्ण—सब अपनेक कृपा सँ ।

[तत्क्षण नगरवारीसभक संग रुक्मिणी प्रवेश करैत छथि ।]

रुक्मिणी—(सहर्षं कृष्णक प्रति) हम बधू बाणपुत्रीक दर्शन सँ पूर्णमनोरथ  
भेलहुँ ।

कृष्ण—से ठीके । त हिनका संग अनिरुद्धकेँ अहाँ आरती करू ।

रुक्मिणी—वेस । (आरती करैत छथि ।)

[गीत सं०—४१]

पुरव-जनम-तप=पूर्व जन्मक तपस्वाक । नागरि=सुन्दरी नायिका



आनन्द भरल नगर भरि, भूषण वसन समारि ।  
यदुपति-भवन गमन करि, कर कीतुक नर नारि ॥  
कनक-कलस पुरहर करि, मणिमय दीप वराए ।  
दूधि अक्षत कर लय कहूँ, चानन भवन निवाए ॥  
नगर नारि यदु-बालक, नागरि सहित सुभाव ।  
हर्षनाथ भन मन दय मिथिलापति बुझु भाव ॥

नारदः—(कृष्णप्रति) किस्ते भूया प्रियमुपकरोमि ।

कृष्णः—अतः परमपि प्रियमस्ति ? तथापीदमस्तु—

राजान, परिपालयन्तु वसुधास्थभेन सर्वे जनाः  
स्वीयच्छूर्म समाचरन्तु समये वर्षन्तु धाराधराः ।  
एतद्वत्तनिबद्धनाटक रसास्वादानुरक्ताश्चिरं  
भूयासु निरपद्रवास्सहृदया भूरस्तु शस्याश्विता ॥१३॥

नारदः—एवमस्तु ।

(उषा) । यदुबालक=अनिदह । वसन=वस्त्र । समारि=सजा  
कय । यदुपति-भवन=कृष्णक घर । कीतुक=उल्लास । कनक-कलस  
=सोनाक घैल । पुरहर=मञ्जुल घट ॥

नारदः—(कृष्णक प्रति) अहाँक आओरो अधिक प्रियकाज हम की करी ?

कृष्ण—एहू सँ अधिक प्रिय होइछ ? तेयो ई होअओ—

राजालोकनि पृथ्वीक नीकजकाँ रक्षा करथु, सब लोक धर्म सँ  
अवन काज करओ, मेध उचित समय पर बरिसओ, एहि कथानक  
सँ निबद्ध नाटकक रसास्वादन मे अनुरक्त सहृदयलोकनि अपद्रव-  
रहित (शांतिमय) होथु ओ पृथ्वी धाम्य सँ युक्त हो ॥१३॥

नारदः—एहनै हो ।

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे)

इति हार्षनाथप्रियागमनो नाम पञ्चमोऽङ्कः ।

इति श्रीहर्षनाथकविविरचितमुषाहरणम्नाम  
नाटकम्परिपूर्णम् ॥

[सप्त बहार भव भेल ।]

॥ द्वारका घुरव नामक पंचिम अङ्क समाप्त ॥

इति श्रीहर्षनाथ कविक बनाओल उषाहरण नामक  
नाटक पूर्ण भेल ॥

★ ★



## परिशिष्ट

हर्षनाथकविक उज्ज्वल गीत

१—श्रीनन्दुर्गाक

जय जय विन्ध्यनिवासिनि ।  
तनुहचि - निन्दित - दामिनि ॥१॥  
आनन शशधर - मण्डल ।  
तीनि नयन अति कुण्डल ॥२॥  
कनक - कुशेशय आसन ।  
वसय निकट पञ्चानन ॥३॥  
शंख चक्र निरभय वर ।  
कर धर शशधर शेखर ॥४॥  
तुल्य पद पङ्कज मधुकर ।  
हर्षनाथ भन कविवर ॥५॥

२—श्रीताराक

जय जय भयहरनि मञ्जु-  
हासिनि । मधु - दमन - कञ्ज-  
आसन - शिव - सेवित - पद - कमल तारिणी ॥६॥  
नवल जलद मञ्जु भास,  
ज्वलित प्रेत भूमिवास  
मुण्डमाल अति विलास, विपदहारिणी ॥१॥  
तीन नयन अहन वरन,  
विश्वव्यापि सलिल सरन ।  
ललित धवल कमल - युगल - चरणधारिणी ॥



लम्ब उदर स्वर्ण कन,  
 द्वीपि अजित कटि अनूप ।  
 चबल - रसन धिकट दशन, दुरितदारिणी ॥२॥  
 मुद्रापञ्च लसत माध-  
 खड्ग काति दहित हाथ ।  
 वाम मुण्ड कुबल मौलि, अक्षोभधारिणी ।  
 भनत हर्षनाथ नाम,  
 जनक नगर नृपति काम ।  
 पुरिअ परम कश्मलधाम, भक्तदारिणी ॥३॥

३ - श्री कुण्डलजन्मोत्सव  
 (सोहर)

(पद) अचिरल जलधर गरजत, घनरस बरिसत रे ।  
 दादुल संकुल रमसत दामिनि जमकत रे ॥ललना॥  
 (छन्द) तड़ित जमकत, जलद गरजत, करत दादुल सोर ओ ।  
 तिमिर सङ्कुल, करत आकुल, निशेष भावज घोर ओ ॥१॥  
 (पद) अवतल देवकिनन्दन, जम सुख चन्दन रे ।  
 सुरनर मुनि कृतवन्दन, कंस-निकन्दन रे ॥ललना॥  
 (छन्द) अवतरल यदुकुल, कमल दिनकर, सकल जन सुखवन्द ओ ।  
 नन्द नयन, चकोर सम्मद, पुरन शारद चन्द ओ ॥२॥  
 (पद) कमल कमल दल गञ्जन, लोचन खञ्जन रे ।  
 विभूवन आपद भञ्जन, जग अनुरञ्जन रे ॥ललना॥  
 (छन्द) जगत रञ्जन, विपदभञ्जन, वदमगञ्जित चान ओ ।  
 नवल जलधर, सचिद तनुवर, विजित मृगमद मान ओ ॥३॥  
 (पद) नार-छिनाओन दगारिन कत धन पाओल रे ।  
 हरपित गोध बन्जन, सोहर गाओल रे ॥ललना॥  
 (छन्द) हरषि गावहि, नगर नागरि, करहि सुरनर जान ओ ।  
 मुनत निवचल, रहत खगमृग, छुटत मुनिजन ध्यान ओ ॥४॥

(पद) मनि मानिक मुकता कत, कञ्चन अभरन रे ।  
 जत छल नन्द भवन घन, पाओल मुनिजन रे ॥ल०॥  
 (छन्द) सुरग गजरथ, कतक मानिक, रतन मुकता साथ ओ ।  
 पावि नटभट गणक चटवट, भेल सकल समाध ओ ॥१॥  
 (पद) सुरगण सहित पुरन्दर, करि शुभ डम्बर रे ।  
 देखन यदुकुल सुन्दर, आएल अम्बर रे ॥ल०॥  
 (छन्द) बरिस सुरगण, कुसुम परसन, मुदित पुलकित अंग ओ ।  
 देव-दुग्धुभि, बाजु अम्बर, होत मंगल रङ्ग ओ ॥२॥  
 (पद) हर्षनाथ भन मनदप, हरि परसन भय रे ।  
 करथ नृपति लक्ष्मीस्वर, जन धन उपचय रे ॥ल०॥  
 (छन्द) हर्षनाथ सनाथ करि, यदुनाथ विभूवनधाम ओ ।  
 पुरथ मिथिला, नगर नामक सकल अभिमत काम ओ ॥३॥

## उचिती

मुपुष्य हृदय विचारि रे ।  
 मुनिअ वचन अवधारि रे ॥१॥  
 सखि मोर परम अजान रे ।  
 राखव - हिनक अभिमान रे ॥२॥  
 परम हिनक जेओ दोष रे ।  
 करिअ तकर जनु रोष रे ॥३॥  
 सह्य लाख अवराध रे ।  
 मुजन नेह नहि बाध रे ॥४॥  
 हर्षनाथ कवि भान रे ।  
 मिथिलापति रस जान रे ॥५॥  
 --(उषाहरण-गीत--२८)

## ५--नायिका वर्णन

देखल सुहागिन रामा ।  
 पुरल लोचनकामा ॥१॥

आनन सारद चन्दा ।

लखि मुनिहुक मति मन्दा ॥२॥

अनुपम भौह कमाने ।

लोचन विषमय बाने ॥३॥

मधुर सुधारस भासे ।

रसमय वचन विलासे ॥४॥

कुचयुग पङ्कज काँती ।

रोमावलि अलि - पाँती ॥५॥

उर कदलीसम सोहे ।

मन्द गमन मन मोहे ॥६॥

हर्षनाथ कवि भाने ।

मिथिलापति रस जाने ॥७॥

#### ६--विरह

अविरल सरस वरिस जलबिन्दु ।

जलधर निकर मगन भेल इन्दु ॥ ॥

कुम्भ कुमुद परिमल लय घोर ।

सरस समय वह मलय समीर ॥२॥

नाचत क्षिप्रगन उपवन जाए ।

पहु परदेश मोहि किछु न सोहाए ॥३॥

जे निश पहराँग छन सम भान ।

से भेल तनि बिनु कलप समान ॥४॥

एहन निहुर पहु आव न रोह ।

अनुलन मदन वहन वह वेह ॥५॥

रसमय हर्षनाथ कवि भान ।

नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान ॥६॥

#### ७--प्रथम-समागम

प्रथम समागम जिव मोर कपि ।

जनि सर मदन चढ़ाओल चाप ॥१॥

हम न जाएथ सखि सुपुरुष पास ।

सुमरि सुमरि हिय बड़य तरास ॥२॥

कमल कली मधुकर अति जोरा ।

हरि पुनु कैलिक करय निहोरा ॥३॥

हर्षनाथ सुपुरुष अनिरोध ।

मालति छमिये जमर सभ दोष ॥४॥

#### ८--विरह

समय वसन्त पिआ परदेश ।

असह सहज कत विरह कलेश ॥१॥

सुमरि सुमरि पहु रहय न धीर ।

मदन - वहन वह वगध शरीर ॥२॥

अलिकुल मुञ्जित कुसुमित कुञ्ज ।

लागु नयन जनि पावक - पुञ्ज ॥३॥

सीतल पंकज चम्पक - माल ।

बूदय दहय जनि विपघरजाल ॥४॥

रसमय हर्षनाथ कवि भान ।

नृप लक्ष्मीश्वरसिंह रस जान ॥५॥

#### ९--उत्तरकण्ठा

हम कि कहय सखि तोरा चित चोरा

आनि मिलाबिअ मोरा ॥१॥

पहु बिनु चित नहि धीरे, नहि धीरे,

वेह वह वहित - समीरे ॥२॥

कओन कुमति मोहि भेला, बिह देला,

पहु विमनस करि लेला ॥३॥

जे घनि कर गुर माने, नहि जाने

तसु मन मनु कि पपाने ॥४॥



फेरि न करव इह काजे मधुराजे,  
जखो पुनि होएत समाजे ॥४॥  
हे सखि ! करहु उपाई, यदुराई,  
एक बेरि देहु मनाई ॥५॥  
हर्षनाथ कवि भाने, परमाने,  
रस भावुक रस जाने ॥६॥

## १०--सौन्दर्य

आज देखल एक कामिनि रे,  
नव वामिनि रेहा ।  
नील वसन लखि अवतार रे,  
जनि जेलद सम्देहा ॥  
तड़ित बेकत होअ निअ रुचि रे,  
परमासन कामा ।  
तसु तनु लखि लज्जित होअ रे,  
पुनु पुनु नतधामा ॥  
विशत गिरिज - नयनानल रे,  
जनि लज्जित चाने ।  
तसु मुख लखि नहि बड़ जन रे,  
सहु निअ अरमाने ॥  
अमल कमल दल मञ्जन रे,  
लखि नयन विलासे ॥  
जनि लज्जित भय लज्जन रे,  
कर बिपिन निवासे ॥  
हर्षनाथ कविशेखर रे,  
रसमय इहो गावे ।  
लक्ष्मीश्वरसिंह गुणमय रे,  
मनदय ब्रह्म भावे ॥

## ( ११ )

तड़ित लता सम सुन्दरि सजनी, देखल अति अभिराम ।  
लोचन-जुगल जुड़ाएल सजनी, लखि तसु तनु अनुपाम ॥१॥  
वदन मनोरम राजित सजनी, लोचन - युगल विशेष ।  
जनि सरसीकह बौसल सजनी, मधुकर - युगल सुवेष ॥२॥  
चललि रोमावलि विषहरि सजनी, लोचन लज्जन लाभ ।  
लखि नासिक पद्मगरिपु सजनी, कुच गिरितट छपि शोभ ॥३॥  
घरण रघत नव तूपुर सजनी, लागत अति अभिराम ।  
जनि सरसिज-दल रचकर सजनी, मदकल मानस-धाम ॥४॥  
जगत-जननि पद सेवक सजनी, हर्षनाथ कवि गाव ।  
रसमय लक्ष्मीश्वरसिंह सजनी, नृप ब्रह्म मन दय भाव ॥५॥

## १२--विरह

आय अपाङ्ग मदन तन बाहु,  
वरिसत मेघ विरह भेल गाड़ ॥  
गरजत घन तन लहरत मोर,  
परदेश विलगहु नन्दकिशोर ॥१॥  
रहब कोन भांसी,  
आलि हुनि श्यामसुन्दर बिनु किछु न सोहती ॥२॥  
सायन सखि सब झलत हिलोर,  
केलि करहु सखि पिया हाँस मोर ॥  
चुनरि भिजल सखि पहिब बनाय,  
विरह अधिक तन सहलो न जाय ॥३॥  
सोधव दिनराती,  
अलि हुनि श्यामसुन्दर बिनु किछु न सोहाती ॥४॥  
भादव के घन गरजत घोर,  
प्रज पर छाव घटा चहुँ ओर ॥  
भिकु गुर निशिदिन बोलत जोर  
यौवन दादुर बोलत मोर ॥५॥



मदन मनोरथ मांती,

अलि हनि श्यामसुन्दर बिनु किछु न सोहाती ॥ध्रु०॥  
आसिन सखि हे आएल करज,

सुख सर से दुख भय गेल अन्त ॥

हर्षनाथ भन मन में आस

प्रीति लगहु हो प्रीतम पास ॥४॥

जुड़ाएल छाती,

अलि हनि श्यामसुन्दर बिनु किछु न सोहाती ॥ध्रु०॥

१३

सखि ! सखि अनुगत भेल ऋतुराजे ॥ध्रु०॥

पिक कुल कल, अनुरजित नवदल,

कुसुमिष उपवन छाजे ॥१॥

अलि कुल कलित, ललित कुसुमाकुल,

विलसित वल्लि अनेके ।

एहन समय पहु, परदेस धिर रह,

कि कह्य तनिक विवेके ॥२॥

नृप-तनयापति, गोपमुता रति,

कय कोन परि यदुवाले ।

पमुपमुतः-कृत, रहि तिमिर नित,

विप्रित भेल से काले ॥३॥

तेजि गेल यदुपति, कयल उचित अति,

असित हृदय थिक बकि ।

कोकिल निज हित, अनुदिन परिचित,

नवदल तेजधि काके ॥४॥

धीरज धय रह, अचिर मिलत पहु,

होएत विरह - अवसाने ।

नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझधि रस,

हर्षनाथ कवि भाने ॥५॥

१४

सखि सखि कहिअ कओन परकारे ।

पहु परदेस गेल, सरस समय भेल, हनय मदन दुरवारे ॥१॥

चान किरन तन, दहय समीरन, चन्दन चम्पक दागे ।

कि करव के कह, विमुख देखि विह, सकल जगत भेल बागे ॥२॥

नलिन-विजन तन विषम गरल सन, अति दह कोकिल माने ।

मदन वेदन तन, असह सहव कत, छन छन निकसत प्राने ॥३॥

धीरज धय रह, अचिर मिलत पहु, होयत विरह अवसाने ।

नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझधि रस, हर्षनाथ कवि भाने ॥४॥

१५--अनुराग

कि कहव दुहुक प्रथम अनुरागे ।

प्रथम विलोकन अवधि दुहुक मन कत अनुछन रस जागे ॥१॥

मदन विषम शर, दलित दुहुक तन, दुहु मन बसु एक काजे ।

दुहुक मिलत मन, रह्य सतत छन, आंतर भय रह लाजे ॥२॥

विरह दहन कत, विषम पराभव, हृदय धरय जत मोई ।

खञ्जरोट चापल मय गजजन, नयन येकत तन होई ॥३॥

मलय पवन धशि किरन सरोरुह, परस दुहुक तन छोने ।

असह सहओ कत, रह्य विकल नित, एकओ न अपन अधोने ॥४॥

प्रथम वचन नहि, कह्य एकओ नहि, दुहु मन करि अभिमाने ।

नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझधि रस, हर्षनाथ कवि भाने ॥५॥

१६--मान

करिअ न हृदय कठोर ।

अवगुन परिहरि परसनि भय धनि, (माननि) पुरिअ अभिमत मोर ॥१॥

सरस वसन्त निहारि जगत भरि, परिहरि प्रिय जन दोष ।

नागर नागरि रमय रहनि भरि, तेहि धनि तेजह न रोष ॥२॥



एक बेरि वचन अमिअ सभ भायिअ, पिक कुल तेजओ मान ।  
सरस विलास हास परगासिअ, अमिअ तेजओ अभिमान ॥३॥  
चाचक जन नहि करय विमुल धनि, मन गुनि बुझिअ सैआनि ।  
मधु तेजि मधुकर, किरय कंटक डर, केतकि काँ धिक हाणि ॥४॥  
शामिनि विति गेल, भोर समय भेल, आब तेजहु धनि मान ।  
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझधि रस, हर्षनाथ कवि भान ॥५॥

## १७--सौन्दर्य

माधव<sup>१</sup> देखल अपरूप रूपे ।  
नील वसनि धनि, जलद बलित जनि, धिर रहु तड़ित सरूपे ॥ ॥  
सिन्दुरविन्दु भाल पर तापर, रचित चिकुर परिपूरे ।  
राहुदशन डर जाए नुकाएल, तिमिर निकर जनि सूर ॥२॥  
नूपुर पचराग पद शिञ्जित, ललित नटन थुति कुञ्जे ।  
नयन भेद कह, पुलक अंग मह, कनक विशेषक पुञ्जे ॥३॥  
कृष्ण युग कनक कलश मद गञ्जन निरखि उपजु मन शंका ।  
तीति भुवन जनि, जीति मदन जनि, कसल अधोमुख डंका ॥४॥  
तसु तनु रचल मदन जनि रसमय, की रस लम्पट चाने ।  
जप तप निरत सतत रस बञ्चित, की बिहू रचत अजाने ॥५॥  
नव-पल्लव गञ्जान मनरञ्जन, अधर बिम्ब निरमाने ।  
नृप लक्ष्मीश्वरसिंह बुझधि रस, हर्षनाथ कवि भाने ॥६॥

## १८ -- नायिकाक अनुनय

किअ बीसलि मुख केरि ॥ध्रु०॥  
मुख सँ पीर दूर करि सुन्दरि, हरखि हेर एक बेरि ॥ ॥  
आनन मलिन निहारि तोहर धनि, धूमय किरय सब ठाम ।  
तुअ मुख चान धकोर मोर मन, कतहु न कर बिसराम ॥२॥

चान किशन चम्पक दल चन्दन, कोकिल पञ्चमगान ।  
तुअ बिलसित मन, हेरपित अनुछन, लगइछ अनल समान ॥३॥  
मोर अपराध परल जँओ सुन्दरि, किअ परितेजहु हार ।  
आनक दोष आन परि तेजहु, के कह एहन विचार ॥४॥  
शामिनि विति गेल, भोर समय भेल, अबहु तेजु धनि मान ।  
नृप लक्ष्मीश्वर सिंह बुझधि रस, हर्षनाथ कवि भान ॥५॥

## १९--नायिका-वर्णन

जाइत<sup>१</sup> देखल नव नागरि रे, नवकञ्चन रेहा ।  
विभूवन विजय मनोरथ रे, जनि रचल बिदेहा ॥ ॥  
लसत कुटिल कच लोचन रे, के कह उपमाने ।  
मोन घुगल बनसी लय रे, बेधल पचवाने ॥२॥  
ललित कोर मुख पंकज रे, छवि देत विदेशा ।  
जनि पुरन शारद शशि रे, शामिनि परिवेशा ॥३॥  
युवजन मानस हाटक रे, अनुछन कर चोरी ।  
ते<sup>२</sup> जनि कृष्ण-युग बान्हल रे, दूढ़ कंचक डोरी ॥४॥  
हर्षनाथ मनदय कह रे, नागरि अनुपामा ।  
पुरुष जनम तप देखल रे, लोचन अभिरामा ॥५॥

